॥ श्रीमद्भगवते सिद्धचक्राय नमः ॥

बाबु साहेब

॥ श्रीमत् प्रताप सिंह चरित्रम् ॥

(दूहा)

रिषभशांति पारशप्रभू नेमनाथ महावीर, पांचे तीरथपति नमूं गिरुवा गुणगंभीर। चरणकमल गुरुदेवना प्रणमूं उठि परभात, लायक दायक ग्यांनना शमदम गुणविख्यात। वरदाता तूंसारदा वसिमुझ मुखआवाश, गुणगाऊं पुण्यवंतनां दीजै वचन विलाश। पुण्यप्रवल जगमे कह्यो पुण्य जबर संसार, पुण्यपरमपद पद्दती पुण्य सदा सुखकार। पुण्य भेद प्रवचन विषै वहुभाष्य जिनराज, तेहमे नवपद साधना तारण तरण जिहाज। हिवणाहूण कलिकालमै नवपद साधन कीध, दूगड़सिंह प्रतापयुत पाम्या नवनिधसिध। किमते आंराधनकियो किम पाम्या सुखसार, तेसगलो वरणन करूं अपनी मतिअनुसार ॥ ७ ॥ ॥ १ ॥

[ढाल चौपाईकी]

एही जंबुद्वीप सुजान, लाख जोयण तेहनो परिमाण। चूड़ी जिमते वल आकार, मेरु शोभे वीच मझार। जंबु दरखत के श्रीकार, मध्यमाहे दीपे सुखकार। तेहथी एहनो जंबु नाम, प्रवचन भाषे सोहमसांम। विविध भांति एहनो अधिकार, आगम भाख्या श्रीगणधार। तेकहता वदे ग्रंथ अपार, एहथी नहि कह्यो बहु विस्तार। दोय लाख जोयन के मान, लवणोदधि जेहनो अभिधान। जंबुदीपने वींटीरह्यो, गुरुमुखथी इममें शरदह्यो। इनही जंबुदीपनो
॥ २ ॥ जान, दाहिन अरध भरत संठाण। पांचशे षटविश जोयन तेह, ऊपर वलि षटकला गिणेह। साढ़ापंचविश नेपरमाण ॥ २ ॥
आरज देश कह्या सुखखाम। अवर अनारज सगलादेश, तेहमे आर्या नही लवलेश। चक्री भरत भयो इनमांही, ते कारण ए भरत कहांही। हस्ति वरण शोभे अत्यन्त, हीमवन्त परवत सीमादन्त। आबु अष्टापद महाराज, समेर शिखरने श्रीगिरिराज। चंपापुरि पावापुरि नाम, राजग्रही परमुख सुख धाम। एसब तीरथ उत्तम ठाम, नित उठ लीजे जेहना नाम। तेकारण ए भरत परधान, गौतारथ गुरुनोएबांन। भरत खेतमे पूरवदेश, इत उपद्रव नही

लवलेश। गङ्गावहती निरमल नीर, मिठो पानि जिम गो षीर। इन अधिकारे पहली ढाल, सबही सुनज्यो बाल-गोपाल। कहै इंद्रचंद प्रताप चरित्र, शुनता श्रोता थाय पवित्र ॥ ११ ॥

[दूहां]

॥ सुखसम्पति रिधसे भरो च्यारे हि दिशि जान, पिण पूरव सबमे शिरे भाषी जगगुरु भाण। तिनही पूरव देशमे घनां नगर अरु गाम, उनकीतो वरणवतनो इहां नही कुछ काम। पूरवदेशै दीपतो पुर मकशुदाबाद, भूमण्डल शिर सेहरो अलिका जिम आबाद। अमल विमल निरमलजलै विचसै वहती गङ्ग, मज्जनकरि शुची होतहै वाशी जन नित चङ्ग। सहर वसै दोनूं तटे द्वादश क्रोश प्रमाण, शोभा देखी तेहनी सुरवर होय हैराण ॥ ५ ॥

[ढाल २ रांणपुरोरखियांमनोरेलाल एदेशी]

॥ देश वङ्गालो दीपतो रेलाल सबदेशां शिरदार शुनोभाइरे इत उपद्रव जिहां नहिरेलाल सुखकारी श्रीकार, शुनो० देश० वरणन तस कुन करीसकेरेलाल सकल पदारथ खान शुनो० आलस नही तिनदेशमेरे लाल उद्यमी सकल जि

॥ ३ ॥

॥ ४ ॥

लाग, शुनो॰ देश॰ आडंवर राजाकुलिरे लाल अवर कोइ नहि कोय शुनो॰ पुरुष सकल लक्षण भर्यारेलाल गुणवन्ता गुणजोय, शुनो॰ देश॰ सौभागी प्राये घना रेलाल दूखिया विरला लोक, शुनो॰ प्रीति परस्पर छै घनीरेलाल धरमी जन गतशोक, शुनो॰ देश॰ कोडीधजतो छै घना रेलाल लक्षपति केइ हजार, शुनो॰ सहस्र-पतीनी गिणती नही रेलाल शतपति घना नरनार, शुनो॰ देश॰ दानी वहुमानी सहीरेलाल ज्यांनी गतविषवाद, शुनो अतिथीतनो आदर घनोरेलाल नही चुगली अपवाद, शुनो॰ देश॰ रागी वागी पारखुरेलाल नही तस्करनो जोर, शुनो॰ सङ्गत पण्डितनी करेरेलाल जैसे चतुर चकोर, शुनो॰ देश॰ शास्त्रमांहे विवरण वहुरेलाल एहवो पूरवदेश, शुनो॰ जिन वर पिण विचर्या घनारेलाल टाली सकल किलेश, शुनो॰ देश॰ दूजी इम अधिकारमेरेलाल ढाल कही इन्द्रचंद, शुनो॰ सांभल चित राजीहुसेरेलाल श्रोता श्रावकवृन्द, शुनो॰ देश ॥ ९ ॥

(दूहा)

पावन पूरव देशमे परमपवित्र प्रधान, तीरथ शिखर शमेतकु जाणत सकल जिहान। वीश जिनेशर शिव गया वहु मुनि

॥ ४ ॥

वर परिवार, अनशन करि इण गिरिवरे पाम्यां भवनोपार। सुरपति नरपति खगपति मनधरि सुन्दरभाव, ए तीरथ सेवो सदा भवजल तारण नाव। ग्यांनी प्राची दिश प्रते उत्तम भाषी एम, निज पूरबदिशने विषे बङ्गदेशछे तेम। धवनी तल शिर सेहरो सबदेशां शिरदार, रिध सिध सम्पतिसें भरयो बङ्ग देशमें सार ॥५॥

॥ ढाल, ३ ॥ (सुगुणसोभागी साहिब श्रीसीमंधरस्वाम, एदेशी)

॥ नगरमनोहर सुन्दरछै मकसुदाबाद, अनधनपरघल लक्ष्मीकरिनें हैआबाद। नगबीठी जिम वसुधातलजो मंडणजान, शोभा जेहनी जाणो अमरपुरीने समान। शोक रहित सुखकारी वरण वशै तिहां च्यार, निज निज करमकरै ते भाग्यतणै अनुसार। अनुरागी गुणवंतना गुणिजन लोक महंत, द्वेष नहीं कोईकै इणी एहवा साजनसंत। वा पीव प्रविहार वरण वनिता वन वैद, वाटिका वाग्मी ब्राह्मण वारी वाडी अभेद। दाहिनी वेश्या विबुध वणिक पाचंयम वीर, विद्या वित्त विवेक विनय वारण रण धीर॥ बाजी बेशर वल्लिका वस्त्रअनेवरराज, वीशने आठ वकार करी शोभित पुरराज। नव नव तूर वजे तिहां रागने रङ्ग विचार, धवल मंगल नित उच्छव घर घर मङ्गलाचार॥ अवरघनांवली सहरने मांहैं लोक वसन्त, विवहारी व्यापारी

करत व्यापार अनन्त। जलवट थलवट मारग दोनूं चलत अपार, अश्व शकटी परमुख करिने वस्तु प्रचार ॥ बहुत धनाव्य वसै जिहां अगणित द्रव्य प्रमांण, कोटी श्वरने लषपति सहस्सपती अनुमान। दायक लायक नायक धीरजधर गुणवांन, आपना आपना धरममें रहै सगला सावधान। जाली महल झरोषा करिने बहुत उत्तंग, तोफा सुभग वडामकांन ते दीपत चंग। इक दुइ तीनजे च्यारके षंडसें शोभित सार, ऐसी हवेली नगरमें वरते अगम उदार। राज करै तिहां यवनपती ते अतुल प्रताप, परजा पालै दारिद्र टालै नामे नवाप। जेहनो विरूद वडोछे दुनियादारीके मांहि, राजकांज सब चालवै एहमें संसय नाहि। इन अधिकारे भाषी एहवी तीजी ढाल, कहै इंद्रचंद सुनो थे सगला बालगोपाल। आगलछे बहुमीठो एहनो अति अधिकार, तेसबि कहिस्यूं मनमे धरिने बहुत सुप्यार ॥ ८ ॥

दूहा

॥ नामे ब्रह्मपुरी भलो खगड़ो सयदाबाद, काशमबाजारने कुलहड़ीयो नरसीपुर गुणजाद। महिमापुर सुखठामछे वालुचर अभिराम, जीयागंजने जानिये अजिमगंज गुणधाम। ए सगला तिन सहरमे सुदार है ठाम, इनके अंतरगत बहुत

॥ ६

छोटा मोटा गाम । मच्छिमापुर वालुचरे अजिमगञ्जमे जान, जिनवरके मंदिर घना दरशन करत कल्याण । एसवतो उत्तम भला अपनी अपनी जाग, पिण वालुचरनो सही सबमे जबर शोभाग ॥ ५ ॥

॥ ढाल ४ ॥ (कपूर होवे अति ऊजलोरे, एदेशी)

॥ वालुचर गुणमणी नीलोरे अति अदभुत सुखकार, दुख दोहग तिहां दूरनहिरे शोभानो आगार । विवेकी सुणज्यो एह चरित्र थासे कान पवित्र, वि० सु० एआं कडी । श्रावकलोक घना वसैरे जिणधरमी गुणवान, पञ्चपरमेष्टी मंत्रकेरे निशदिन जपत सुजान । वि० सु० पोसहशालामे तिहांरे साधु मुनि मनरंग, दे उपदेश सुहामनोरे आगम अरथ सुचंग । वि० सु० इकविश गुण धारक सहीरे श्रोतावहु श्रुतलेह, अवगुण तज गुणने ग्रहेरे धन नरनारी तेह । वि० सु० ओशवालना वंशमेरे गोतछे विविध प्रकार, लुणियाके दूक गोतनारे वालुचर वसे सार । वि० सु० ढंढ तिहां जिनमंदिरेरे अवर कोइ पर नांहि, द्वेष अछे दुरीवातसूंरे वैर नही कोइ मांहि । वि० सु० जिन शासन उन्नति करेरे राखे धरमथी राग, करम पुष्ट जेहथी होइरे चाले नही ते माग । वि० सु० पडिकमणा सामायकेरे पोसह करत

॥ ७ ॥

विचार, मिथ्यामति राचे नहीरे एहवा बहु नरनार। वि० शु० चरित्र पावन पुण्यवंतनोरे तेहनी चोथी ढाल, मुनि इंद्र चंद कहेप्यारे सुनता मंगल माल। वि० शु० ॥ ८ ॥

[दूहा]

॥ तिन बालुचर पुर विषे मंदिर तीन प्रधान, श्रीजिनवर महाराजनां जाणो भविसुजान। संभवनाथ जिणंदना चैतालय जिहां होय, प्रथम जिणेश्वर जीतनो एक जिनालय जोय। अति उत्तंग मनोहरु देहरा तेहिजतीन, निरषत भविहरषित हुवे मिथ्याती होइ हीन। धजा फरूके पवनथी शिषर उपर सुषकार, घोकरषण करैउविकने आवो जिनगृहद्वार। दरसन कर परसन हुवो काटो करमकी लेश, आतम गुण निरमल करो पूजो प्रभूजी हमेश ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५ ॥ [नायक मोह न चाविये, एदेशी]

॥ प्रात समै हरषे करी जिनवर दरशन करवारे, आवे भवियण भावथी पाप करम दल हरवारे। प्रात केइ वसुविध पूजा करे स्नान उच्छव करे केइरे, सतरभेदी नवपद तणी करता पूजा केइरे। प्रा० तनमन वचन विमल करी पंचे अंगन माइरे

॥ ८ ॥

चैत्यवंदन करताकेइ जिनवरका गुण गाइरे । प्रा० श्रावक श्राविका भावसैं जिनपुर साथियो पूरैरे त्रिकढि गली उपर करै दुख दुरगतिने चूरेरे । प्रा० इम करि पूजा प्रभावना जिनमतने दीपा वैरे नरनो भव सफलो करै वारि भावना भावैरे । प्रा० व्रत पचषाण करैकेइ सद्गुरु सेवा करतारे चउदह नियम संभारता धरम राग मन धरतारे । प्रा० द्वादश व्रत केइ

६ पालता जीव दयानां रागीरे साधरमी भगती भली करताकेइ वड़ भागीरे । प्रा० बरणन बालोचरतणो किञ्चित एमे कहियोरे वाकी फिर कहिस्यू सही जेहवो मनशर दहियोरे । प्रा० दूगड सिंह प्रतापनो पावन चरित्रए जांणीरे कहै इन्द्रचंद एपांचमी ढाल भविक मन आणीरे । प्रा० ॥ ६ ॥

॥ दूहा ॥

॥ किसविधपूरब देशमैं बालूचरके माह आया पुर्वज तेहना देश थकी उच्छाह ॥ १ ॥ कवण वषत कुण आविया सोसगलो अधिकार कहिसूं जिमकै तिम सही सुणज्यो सब श्रोतार ॥ २ ॥

ढाल ॥ ६ ॥ कंततमाखूप रिहरो एदेशी ॥

सहर किसनगढ दीपतो मरु धर देशमझार लालरे ओशवाल श्रावक घणा वशैं जिहां सुषकार ला० । सह० गात सकल शिर सेहरो दूगड गोत्र प्रधांन ला० । श्रावक श्रीवीरदासजी रहै तिहां गुणवांन ला० ॥ २ ॥ स० नथमलजी बुधसिंहजी वनसिंह नाम प्रधान ला० । तीनपुत्र एहवडा वीरदासनां जांण ला० ॥ ३ ॥ स० इकदिन ते वीरदासजी मनमे उपनो भाव ला० । करसूं शिखर समेतनें ए नर भवनेदाव ला० ॥ ४ ॥ स० पुत्र सहित तिहांथी चल्या आया शिषर समेत ला० । वामानंदन भेटिया अधिक धरी मनहेत ला० ॥ ५ ॥ स० पर्बत ऊपर जायनें फरस्या बीस जिणंद ला० । नरभवने सफलो कीयो आंणी मन आणंद ला० ॥ ६ ॥ स० जात्राकरिने आवीया पुरमकसूदाबाद ला० । सुषनो थानक देषियो वालोचर आवाद ला० ॥ ७ ॥ स० पुत्र सहित वीरदासजी रह्या बालूचर आय ला० । अनुपम सुषने भोगवै पूरव पुन्यपसाय ला० ॥ ८ ॥ स० इण अधिकारे एकही छट्ठी ढाल रसाल ला० । श्रोता सुन सुष पामसी कहै इंद्रचंद गुणमाल ला० ॥ ९ ॥ स० ।

॥ दूहा ॥

संवत अठारह सैतवी वारहकी शुभ शाल , आया पूरव देशमें वीरदास उजमाल । शुभदिन शुभपल शुभघड़ी शुभमहूरत

१०

ने देष, बालूचरकै वीचमें कोठी करी विशेष। पिता पुत्र हिलमिल करै महाजनी व्यापार, जैनधरम परशादसै दिन दिन जय २ कार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ७ ॥ श्रीशंषेसर पाश्व जिणे सरभेटिए एदेशी ॥

॥ नथमल पुत्र सुजाण भडो बुध आगलो मांनेपिताकी आंण जांणै सव मांमलो धरम मांहिं सावधान सकल गुण सेहरो

 निरमल मन परिणांम धवल जिम देहरो। गुणगाहक बनसिंह दूजोसुत जाणियै मांनै हुकम प्रमाण पिताजो बषाणियै सब

वातां हुसियार गाफिल नही तैकदा, जिनबर बचन बषांण सुणै तै सर्वदा। पुत्र तीजो पुन्यबांन चतुर गुण ग्यांनमें बुधसिंह बुधकी षांन जगत दूर ग्यांनमें, रहैं शदा सावधांन सरब व्यापारमें कोई नकरे तसुहोड़ मनुष्य संसारमें। भण्यां गुण्या सुत तीन चोषें चित तै भला अधिका एकथी एक जबर चढती कला सुंदर रूप आकार देष्यां सहुने गमै, तरुण पणै थया तेह तिणांनै तिन समै। वीरदाशजीं सेठ तै लगनलै वायके सावो सुंदर यापनै हरष सवायके परणाई कुलवंत कन्या तीनै सही उच्छव करीय अपार परम मन गह गही। न्याती गोती सवे संतोषी भावसें जश लीधो जग मांहि अधिक उच्छाहसें घरसा

रूदीयो दांन बहुत जाचक प्रतैं, कीनो सघरो विवाह विरुद वढते छते। वर कन्या दिन रात पांचे इंद्रीतणां पूरव पुण्य प्रमांण ते सुष विलशे घणां पुत्र पिता परिवार परम सुषसों रहैं, धरम करम सब काम शदा ते निरवहै। रहतां रहतां एम वरश बहु बीतिया वीरदाशजी सेठ रागादिक जीतिया धरतां धरमनो ध्यांन आयू पूरण करी, पहुंता शदगति मांहि ते धन शन उचरी। पावन चरित्र प्रधांन प्रगट पुण्य वंतनो सुनता मंगल माल रचै गुणवंतनो सातमी ढाल रशाल कहिरलियामणी, मुणि इंद्रचंदनी वांणि सजन मन भावनी॥ ८ ॥

॥ दूहा ॥

॥ जैसें पांणी दूधके प्रीत पटंतर नांहि। तैसें तीनूं भ्रातके प्रेम भाव हुलसांहि ॥ १ ॥ राग द्वेश नही छल कपट निरमल मन परिणाम। हंसी षुसी दिन निगमै निश दिन आठोजाम ॥ २ ॥ सामायक नित प्रति करै नहीं तजे कुलटेक। पड़िकमणा पोसा प्रमुष करै धरम सुविवेक ॥ ३ ॥ च्यार भेदछै धरमना दांन शील तप भाव। सो तीनो भाई करै भवजल तरण उपाव ॥ ४ ॥ शमकितने उजवालता मनधरि शुध परिणाम। रागी जैन धरम तणां बहु श्रुत गुणके धाम ॥ ५ ॥

१२

॥ ढाल ॥ ८ ॥ चिपदीनी ॥

॥ इण विध तीनो भाई रहे हिलिमिलि निशदिनें सुषसो कालगमा वता ए, प्रात समै उलसाईरे हरष धरी मनै जिन मन्दिरसे जावताए। करै दरशण मनरंगरे त्रिकरण शुध करी शमता भाव धरी सदाए, आतम करि मनचंगरे शरधा अनुशरी पूजै जिनवरने मुदाए। चउदह पूरव साररे मंत्र नवकारनो जाप जपै निशि वाशरेए, करता पर उपगाररे तत्व दयातणो स्यादवाद मत आशरेए। पालै व्रत पचषांणरे पंचतिथै सही गुण श्रावकनां धारताए, नवतत शमकित जांणरे जिम आगम कही मिथ्या मतने वारताए। शक्ति तणै अनुसाररे शाशन उन्नति करै बेयावच गुरु तणीए, सफल करै अवताररे जयणा शुधमती साधरमी भगती घणीए। मांने सव कोई वातरे सजन सहु मिली सुजश घणो महिमां वहूए, एह वाते विख्यातरे अकाल अतुल वली बिरादरी मांने सहूए। धन संपति परिवाररे बधता दिन दिने सुखे विलशै रलियामनोए, इण विधए अधिकाररे भाख्यो कवियणै श्रोता जन मन भावनोए। दूगड़ गोत्र प्रधांनेंरे परताप सिंहजी तेहनो राश सुहामणोए, पूरण कह्यो प्रमांणरे पहिलो षंडजी सुणतां भवि सुख पावणोए। तेहनी आठमी ढालरे कही इन्द्रचंदने पूरव वात हुई जिकाए

॥ १३

सुणज्यो वाच गोपाकरी मन धरि भावने आगल वात थके तिवार ॥ ६ ॥ चौपाई—प्रथम खंड उत्तम गुणखाण । पूरण करियो ते परमाण ॥ श्रोता वक्ता घर आणंद । कहे कवियण वचन अमंद ॥ १ ॥ ॥ * ॥

॥ * ॥ इति श्रीपुण्यपवित्रे प्रतापचरित्रे प्रथम खंडः संपूर्णतामगमत् ॥ * ॥

॥ श्रीभगवते सिद्ध चक्राय नमः ॥

बाबू साहेब

॥ श्रीमत् प्रताप सिंह चरित्रम् ॥

द्वितीय खंड

दूहा— ॥ सिद्ध चक्र सब दुख हरे सुख संपति करतार । प्रणमूं भाव धरी सदा नित प्रति वार हजार ॥१॥ तीन रतन नित अनुसरी साधे मुगतिनो पंथ । मिथ्या मति खंडन करे ग्यांनी गुरु निगरंथ ॥ २ ॥ मूरखने पंडित करे देई अक्षर ग्यांन ।

॥ १४ ॥

प्रणमूं पदकज तेहना मन धरि भाव प्रधांन ॥ ३ ॥ श्रुत देवी जे भगवती सरसति माता जेह । करजोड़ी करुं वंदना शुभ व चर देतेह ॥ ४ ॥ इष्टदेव सुमरण करी प्रणमी शीश नमाय । पावन चरित्र प्रतापनी करुं रचनां चितलाय ॥ ५ ॥ प्रथम खंड वरणन कह्यो पूरण हुवो प्रमांण । दूजो षंड अब बोलस्यूं अपणी मति अनुमांन ॥ ६ ॥ जिम मिठी साकर भली मीठो जिम गोषीर । तिम मीठो अधिकारछे आगे गुण गंभीर ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ मोतीड़ांनी हमारो राजिंदा एदेशी ॥

॥ सकल कुशल मंगल वरदाई चरित्र पावन पुन्यवंतने गाई सांभलो गुणवंता श्रोता सांभलो गुणवंता पुन्य प्रबल जगमाहे जांणो पुन्यथकी होवे रंकनें रांणो । १ । सां० पुण्यपथकी पांमे सुषशाता पुन्य थकी सब पाप पुलाता सां० पुन्ये आवे घरमें कमला, जगमे कीरति पुण्ये विमला । सां० सुरवर नरवर पुण्ये बलिया, पुण्य विहुणां घर घर फिरिया । सां० पुण्य पदारथ जगमे साचा, पुण्य बिणा सब षिलहै काचा । सां० पुन्यकी करणी भवजल तरणी, आगम बेद पुराणें बरणी । सां० पूरब पुन्य होवे जसु पूरा, दुख दोहग तेहथीरहे दूरा । सां० हाथी बाघ अगनि रण रोगा, विषधर वारिधि बंध-

॥ १५ ॥

य योगा। सां० एहिज पिकट महाभय चाठे, पुन्य पशाये वेगला नाठे। सां० तेसठ पुरुष महाराज नामी, अभवत जगमें गुणके स्वामी। सां० ते पिण पुन्य प्रशादे हूवा, शास्त्र मांहे कह्या जूवा जूवा। सां० जेहने होवे पुन्य सषाई, तेहनी महिमा सब जग गाई। सां० संचै निरंतर पुन्य खजाना, संतत मन बंछित फलपाना। सां० पुन्यके कारण बहुला प्रांणी, समकित सुद्ध करै फल जांणी। सां० तेहथी थाये अलप संसारी, तेहथी पुण्य करो नरनारी। सां० पाव न चरित्र प्रतापनो जांणो, कहै इन्द्रचंद ते महिमां बषांणो। सां० दूजे षंडे पहिलीढाल सुनतां घर २ मंगल माल ॥ ९ ॥

दूहां

पुण्य जोरावर जगतमे पुण्य थकी नवनिद्ध। पुण्ये सबकारजसरे पुण्य प्रगट परसिद्ध ॥ पूरव पुण्य प्रतापसें इण रीतें ससनेह। मनवंछित सुषभोगवै तीनो भाई तेह ॥ इम करता बनसिंहके पुत्र हुवा तब दोय। रूप निरष माता पिता मनमे राजी होय ॥ प्रथम बहादुर सिंहजी हुवा बहुत हुसियार। दूजो बषतावर कह्यो जांणो ए अधिकार ॥ अब कहस्यूं बुधसिंहनो सुंदर सकल विचार। सावधांन श्रोता तुमे सुनजो थइ हुसियार ॥ ५ ॥

॥ १६ ॥

ढाल ॥ २ ॥ करम परिचा करण कुंमर चल्योरे एदेशी ॥

समकित धारीरे श्रावक जांणीयैरे बुधसिंह नाम विख्यातरे धरम धुरंधर गुण गण आगलोरे जगमें जस अवदातरे सम० बालूचरमें नित सुखसों रहैरे धरमप्रतें आराधैरे पर उपगार करण अति उद्यमीरे संवर मारग साधैरे सम० संगति करता रे गुरु गुणवन्तनीरे जिन शासनके रागीरे जीव दयाते धरमनो मूलछैरे तेपालै बड भागीरे सम० कुगुरु कुदेवनो सङ्ग नही करै रे शुद्ध स्वरूप विचारैरे केवली भाषित वचन ते तर दहैरे पच एकन्त निवारैरे सम० देवतो अरिहन्त गुरु निग्रन्थ जेरे धरम अहिंसानो साचेरे सरधै सुधा ए तीनू तत्वनैरे मिथ्या मत न राचेरे सम० इम निज आतम गुणनै पोषतारे समकितनै उजवालरे सरधा साचीरे जिन मतनी खरीरे दूषण सगला टालैरे सम० बुधसिंहदूगड़ चावोचि हु दिशैरे जांणै दुनियां लोगरे पूरब सञ्चित पुण्य पशाय थीरे सुख भोगवै संयोगरे सम० इम करतां वच्छर केई बीतीयारे तब कोई जीव पुण्यवन्तरे तेहनै घर आवी अब तर्योरे धरम थकी सुख सन्तरे सम० पावन चरित्रए परताप सिंहनोरे तेहनै दूजे खंडैरे ढालए दूजी वाही इन्द्रचंदनैरे धरम थकी थिति मंडैरे सम० ॥ ६ ॥

दूहा

भार्या ते वुधसिंहकी शीलवती गुणखांण। पति अनुरागी ते सदा रंभा रूप समांन ॥ इक दिन सूतीसेजमैं निद्राके आधीन। कुछ सूती कुछ जागती आधीरात अदीन ॥ सुपनोतैणें देषीयो सिंह तणो सुविशाल। क्रीड़ा करतो नभ थकी ऊतरतो सुकुमाल ॥ निज मुख मांहै पैसतो निरष थई उजमाल। याद करै सुपनां प्रतै उठ वैठी ततकाल ॥ रोम रोम तन उलसीयो मन प्रसन्न सुखकार। सुपन अरथ पूछन भणी गई पति निकट उदार ॥५ ॥

ढाल ॥ ३ ॥ करकंडूनै करूं वंदना हुंवारी ॥

सुपन अरथनें पूछवा साजनिया निज पिउजीने पासरे साजनिया लाल राजहंस गति सारिषी सा० मधुरगती अनायासरे सा० सुपने० अरज हमारी सांभलो सा० तुमेछो सिरना ताजरे सा० अन्तर जामी वालहा सा० सारो वंछित काजरे सा० सुपने० आज आपणें महलमै सा० सूतीमें सुष भर पूररे सा० कांई सूती कांई जागती सा० आधीरात सनूररे सा० अर० सिंह सुपन इक देषियो सा० जेहनो वरण सपेदरे सा० नभथी ऊतर मुख पैसतो सा० लीला

॥ १८ ॥

सहित सहेतरे। सा० अर० एहनो कांई फल होवसी सा० कांइ कल्याण विशेषरे सा० ते सघलो मुभनें कहो सा० मुझ पर सुनिजर देषरे सा० अर० तब निज मति अनुसारथी सा० बुधसिंह सेठ सुजांणरे सा० ईहापो मनमें करी सा० निश्चय करि कहि वांणरे सा० अर० सुखकारी तुमे देषता सा० ए सुपनो श्रीकाररे सा० दायक वंछित संपदा सा० उत्तम भोग उदाररे सा० अर० पुत्र ते होसी तांहरै सा० शुभ लक्षण गुण खांनरे सा० कुलमै दीपक जेहवो सा० सुंदर रूप निधांनरे सा० अर० दूजै खंडे तीसरी सा० इण अधिकारे ढालरे सा० कहै इन्द्र चंद एहथी घणो सा० आगै प्रवंध रसालरे सा० अर० ॥ ६ ॥

दूहां

स्वांमी थे साची कही ए सुपनां की बात। मांहरै मनमांनी सही ए निश्चय अवदात ॥ एह अरथ इमही जके नही एहमै संदेह। हम चाहै तुम वाह ज्यो मनमें धरीय सनेह ॥ तिहांथी ऊठी तिण समैं आज्ञा धवकी लेय। आई अपणै महलमैं चितमैं हरष धरेय ॥ सुपनो राषण कारणै सपरिवार जागन्त। धरम कथा करती थकी त्रिकरण योग हसन्त ॥

ढाल ॥ ४ ॥ ग्यांन निरन्तर वंदियै एदेशी ॥

इम करतां दिन उगीयो रयण बीती भयो प्रात सुग्यांनी उदयाचल पर उगीयो दिनकर प्रगट विख्यात सु० चरित्र शु-
नो पुन्य बन्तनो थिर करी मन बच काय सु० निंदा विकथा मेलनै धरमकी लगन लगाय सु० चरित्र० अपणै अपणै का-
ममैं सरब हुवा सावधांन सु० चक वासैं चकवी मिली ए लच्चण सुविहांन सु० चरित्र० वुधसिंह सेठजी उठीया सेज थ
की तिण वार सु० चतुर पुरुष चाकर प्रतैं हुकम कियो सुषकार सु० चरित्र० बाहरै वैठणकी सभा जेछै सुन्दर सार ॥ २० ।
॥ २० ॥ सु० तेहनै फरस बिछायकै तुरत करो तयार सु० चरित्र० तेपिण हाथनै जोडकै शीस चढावी आंण सु० सब कारजनी
पजावीया हुकम कियो परमांण सु० चरित्र अभ्यंगादिक सब करी मज्जन करि तिन चंग सु० बस्त्र आभूषण पहिरनै सोभित
कीया सब अङ्ग सु० चरित्र० सेठ सभामै विराजीया निज परिवार समेत सु० बुद्ध विचच्चण ज्योतिषी बोलाया शुभ चेत
सु० चरित्र० चोथी दूजा खंडनी ढाल हुणै अधिकार सु० मुनि इन्द्रचंद कही भली सुणतां हरष अपार सु० ॥ ६ ॥

दूहा

अनुचर अपणा मूंकिया जोसी तेड़ण काज । ते पिण बोलाया भया आया तुरत समाज ॥ करजोड़ी बुधसिंहनै देवै शुभ आसीस । देश तथा परदेशमैं जय विजयें सुजगीस ॥ सेठ कह्यो ब्राह्मण प्रतैं सगलो सुपन विचार । ते सांभल इम बोलिया सुणो सेठ सुखकार ॥ पुत्र हुसी इक थांहरै पुन्य प्रबल बुधवांन । जश नामी ऊमर घणी सब लच्चण सावधांन ॥ अन धन बस्तर देयनै किया विसर्ज्जन तेह । अब अधिकार कहूं हिवैं आगै बाकी जेह ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ५ ॥ नणदल विंद लीदे एदेशी ॥

इम करके दिन जातां वरतैं बहुली सुख साताहो साजन बात सुणो कोई पुन्यवंत जीव सुर गति थीचवी सुख सीवहो सा० शीलवतीनी कूखैं आवि अवतरियो आऊखैंहो सा० जेदिनथी गरभमैं आयो सुख सम्पतिवधती सवायोहो सा० उत्तम गरभ पसायैं मन मनोरथ अति हुलशायैहो सा० तीरथ यात्रा जायैं दांन देवानो मति थायैंहो सा० देव पूजा दया पालै जप तप व्रत कर सुविसालैहो सा० दुखियानी अनुकम्पा चित चिन्तवत इम चित चम्याहो सा० एहवा मन परिणामैं शुभ गरभ तणा एकामैं हो सा० अनुक्रम गरभनैं पोषैं विधि शास्त्र तणी चित चोषैं हो सा० अपणा सजन सखाई

मनराजी करिनें सदाईहो सा० नाना प्रकार मिठाई करी साध जिमावै भाईहो सा० सेठाणी मन मांहै जे जे अभिलाषा चाहैहो सा० ते सब सेठजी पूरै कोई बांछा न रहै अधूरैंहो सा० इम नव मास सनूरा साढासात दिवस थया पूराहो सा० गरभ तणी थिति जेती थई पूरी सहु सुख सेतीहो सा० पांचमी ढाल रसाल खंड दूजै भई गुणमालहो सा० कही इन्द्र चंद मन रंगे सुणै श्रोता मननै उमंगैहो सा० ॥ ६ ॥

दूहा

अष्टादश शत संवतें शुभ वच्छर सैंतीस। पोस शुदी पूनिम तणो दिवस परम सुजगीस॥ गरभ थिती पूरण थयां सेठाणी तिणवार। प्रसव्यो पुत्र रतन तदा लच्छण युत सुखकार॥ सजन सबे राजी थया वंछित कारज सीध। दीन हीन दुखिया प्रतैं दांन अनर्गल दीध॥ दीध बधाई दोड़कै दासीयैं तिणवार। बुधसिंह सेठ षुसी हुवा सुणी सुत जनम उदार॥

ढाल ॥ ६ ॥ आज दिन मासनो छेड़लो एदेशी ॥

शुभ दिन शुभ घड़ी महुरतैं पुत्र जनम थयो तांमरे, दासीयें दीध वधावणी सेठ तसु दीयै दांमरे १ शु० मस्तक तास

धोवायनें दासी पणो कस्यो तसु दूररे, जनम पर्यंत सुषनी करी अन धन देई भर पूररे २ शु० तब तिहां जीव छोड़ावीया धरमी मन पर उपगाररे, कैदखांणा थीरे कैदीया बहुत छोड़ाविया धाररे ३ शु० प्रसव व्यापार पहिले दिनें नाल छेदनादि कर्मरे, कुलक्रम करिय सहू रीतनें जेह गृह स्थनो धर्मरे ४ शु० अनुक्रम करीय छट्ठी तदा दिवस चोथे तथा तेहरे, दूर कर सूतक गृह थकी पावन कियो सब गेहरे ५ शु० एम करतां दिन बारमें सजन कुटंब सब लोगरे, विवध पकवान बहुत जातिनां न्यातिनें जिमवा जोगरे ६ शु० अतिही उत्कृष्ट मन हरषसें न्यात सगली जिमायरे, भांति अनेक जुगति करी पान तंबोल देवायरे ७ शु० करीतब वस्त्र पहिरावणी अवर आभरण अनेकरे, इण विध सेठ निज न्यातिनी भगती करी धरीय विवेकरे ८ शु० इण अधिकारमें एकही ढाल छट्ठी सुखकाररे, खंड दूजे इन्द्र चंदने आगेछे बहुत विसताररे शु० ॥ ९ ॥

दूहा

प्रमुदित थई बुधसिंहजी न्याती सरब जिमाय। करजोड़ी सहु आगलै वचन इस्या कहिवाय॥ जेदिनथीए गर्भमै आयो पुत्र रतंन। तिण दिनथी बधिया अमे जाणो तुम साजंन॥ जस कीरत परतापसें मांन प्रीत सतकार। बहुत भ-

॥ २३

में दुनियां विषै आदर सुख श्रीकार ॥ मन वंछित अम मन तणा सगला सरिया काज । तुम आगल ते कारणै नाम थापियें आज ॥ सिंह सुपन अनुसारसे सुंदर दीधो नाम । प्रताप सिंह कुमर भलो अदभुत गुणको धांम ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ७ ॥ कर्म नछूटैरे प्राणीया एदेशी ॥

पुत्र जनम उच्छव करै वुधसिंह सेठ सुजांण घर अनुसारे द्रव्यनै षरचै थई सावधांन १ धरम करो तुमे प्रांणीया धरमें पाप पुलाय धरम कियां सुखनीपजै धरमे दालिद्र जाय २ धरम० पुत्र सपूत मिलै सही दीरघ आउषावांन धरमें कलत्र मिलै सती जांणै सकल जहांन ३ ध० सेठ बिरादरी माहिनै वैठै साकर घोल हरषित थई मन मोकलै वीडा पान तंवोल ४ धरम० दिन २ एम अनुक्रमें पुत्र वधै सुखकार पांच धायां पाली जतो सुर तरुने अवतार ५ धरम० धन २ वुधसिंह सेठजी पुत्र तणो मुखदेष जनम सफलो अपणो गिणै मनमें आमोद विशेष ६ धरम० इम ते वच्छर पांचनो कुमर थयो परताप सजन कुटुंव सहु देषनै राजी होवेंजी आप ७ धरम० हिव सहु कहै ए कुमरजी हुवा पढावा जोग मात पिता सुण वोलीया साची कहै सहु लोग ८ धरम० दूजै खंडैरे सातमी कही इन्द्र चंद ए ढाल आगल वात अछै घणी सुणज्यो बोल गोपाल धरम० ॥ ९ ॥

॥ २४

॥ २५ ॥

दूहा

सांचा ते माता पिता पुत्र तणा हितकार। विद्या खूब पढायके बहुत करै हुसियार॥ माता वयरी जांणिये जनक ते शत्रु समांन। सुत न पढावै हित धरी मूरख राखै जांण॥ पांच वरस तक पुत्रको लाड़ करै सहु कोय। दस वरसां तक ताड़ना भाषै पंडित जोय॥ एह वचनहै नीतका मनमें करिय विचार। करै तयारी सेठजी पुत्र पठन विवहार॥ शास्त्र जाण कोविद प्रतैं भूधवने बोलाय। पुत्र पठनके कारणें शुंदर लगन लिवाय॥ ५॥

ढाल ॥ ८॥ पंचमि तप विधि सांभलो एदेशी ॥

बुधसिंह सेठ उच्छव करे निज सुत पढवा साहरे धन षरचे अति मोकलो मन धरि भाव ते वाहरे बु० महुरत आयो देखिने शुभदिन शुभघड़ी बेलारे भोजन भगति करी भली त्याति सरव करि भेलारे बु० श्रीफल फोफल सोपारी खारक पांन मिठाईरे दाख लवंग एलायची मिश्री बदाम मिलाईरे बु० पाटी खड़िया वरतणां रजत सोनांना बनाईरे इत्यादिक बहु भातिनी विविध तइयारि कराईरे बु० विधि पूर्वक मज्जन करी कुमरने स्नान करावेरे पट आभूषण नव नवा बहु मोला पहरावेरे

॥ २५ ।

बु॰ गज ऊपर बेसारिने माथे छत्र धरी जेरे चामर शशि रवि ओपमां दोनूं पासें करी जेरे बु॰ मंगल गीतने गावती सधव
वधू मिलि टोलीरे केसरनां वलि छांटणां बहु मोलीले रोलीरे बु॰ वाजा अदभुत वाजता देव दिशि गहरा गाजेरे केतु पता-
का फरहरे नोबत डंका वाजेरे बु॰ इण आडंबर तिण समे वालूघरमें आवेरे गुरु पासें विद्या पढे याचक दान अपावेरे बु॰
दूजे खंडे एकादशी आठमि ढाल सुरंगीरे वाणी मुनि इन्द्र चंदनी आणो भवि तुमे चंगीरे बु॰ इण अधिकारे ए थयो दूजो खंड
ते पूरोरे वाच गोपाल तुमे सुणो आगे प्रबंध सनूरोरे बु॰ खंड खंड मीठो अधिकार सुणतां भणतां हरख अपार उत्तम जीव
तणां अवदात कहतां पावन रसनां थात ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीपुण्यपवित्रे प्रतापचरित्रे द्वितीयो खंडः संपूर्णः ॥

॥ २६

॥ श्रीमद्भगवते जिन चन्द्राय नमः ॥

बाबू साहेब

॥ श्रीमत् प्रताप सिंह चरित्रम् ॥

तृतीय खंड:

दूहा

श्रीसिद्धाचल तीर्थने थिर करि मन वच काय । चह निस करिए वंदना विघन विलय होजाय ॥ सब तीरथ शिर सेहरो गिरिवर शिखर समेत । करजोड़ी करूं वंदना साधो शिवपुर खेत ॥ चम्पापुर तीरथ विषें कल्याणक युतपंच । वासुपूज्य मुगते गया प्रणामूं तज खल खंच ॥ गिरनारें शिवपद लह्यो राजुलनो भरतार । तस पद पंकज प्रणमता सफल होय अवतार ॥ पावापुर महावीरजी मुगत गए मन रंग । ते तीरथ नमिए सदा मन धरि भाव अभंग ॥ सब तीरथ सुमरण करी धरि सद गुरुनो ध्यान । प्रणमी शारद मायनें मागूं अविचल ज्ञान ॥ पावन चरित्र प्रतापनो तेहनो तीजो खंड । क-

॥ २७ ।

हूं वरणन हिवे आगले समकित [illegible] ॥ ७ ॥

ढाल ॥ १ ॥ कामण गारोए कूकडोरे एदेशी ॥

विनय करी विद्या पढेरे परताप सिंह कुमार तन मन वचन लगायनेरे गुरु पासें निरधार च० चरित पावन पुन्यवन्तनो रे तुमे सुणो भवि नर नार समकित पुष्टने कारणे रे धर्मनो ए अधिकार च० दायक आगम वांचनारे जिन मत केरा जाण एहवा सद्गुरु साहिवारे सुमति गुपति सावधान च० हितकारी ते शिष्यनेरे पाठ पढावण हार प्रेम करीने सीखवेरे मन धरि पर उपगार च० स्याद्वाद मत जाणियेरे जिनमतमें नयसात सातसे भेदछे जेहनारे नहि कोई पक्षपात च० प्रवचन माता आठछेरे दशविध मुनिवर धर्म नवतत्वनां अवदातनेरे सहुनां बतावे मर्म च० खेत्र समास भणावतारे संग्रहणीनो विचार भेद करम ग्रंथ सूत्रनांरे अरथ पढावे सार च० इत्यादिक गुण ज्ञान नांरे बहुत घणां सुविचार कुमर पढीने ते थयारे विद्यार्थी हु-सियार च० पहिली तीजा खंडनीरे ढाल दूणें अधिकार कहि इन्द्रचंद सोहामणीरे श्रोता ने सुख कार च० ॥ ९ ॥

दूहा.

अवर पढाया कुमरने सूक्ष्म वहुत विचार। वोल चाल जिनमत तणां कहतां नावै पार ॥ निश्चय नय व्यवहारनां प्रवचनमे सुखवाद। सद गुरुनां परसाद थी कुमर थयो आवाद ॥ गुरु संगतथी शिष्यने होवे अनुभव ज्ञांन। जिम तरु संगति पायके वेल चढे असमान ॥ संगतथी तिल तेलमे होवै नांम फुलेल। जल संगतिनां मेलथी पसरे पय पर तेल ॥ उत्तम गुरु संगति लही विद्यार्थी गुणवांन। कुमर थयो परतापसै जिन शासनको जाण ॥ ५ ॥

ढाल ॥ २ ॥ ईडर आंबा आंबलीरे एदेशी ॥

२६ ॥ वढतां लिखतां तिण समेरे परताप सिंह कुमार दश वच्छरनो ते थयोरे अदभुत गुण आगार भविक जन सांभलो एह ॥ २६ ।
चरित्र थास्ये कांन पवित्र भविक ज० महाजनी विद्या पढैरे कोठीवाली जेह लिखत गणितनी जेकलारे तेसवि सीख्या तेह भ० सा० अवर कुमर ते वलि पढ्यारे विद्या बंगला सार बुद्धि विचक्षण चातुरीरे लक्षण दक्ष ऊदार भ० सा० रूप मनोहर कुमरनोरे निरखी हरखे लोक धनधन कहे सहु सेठमेरे ए नंदन तुम जोग भ० सा० कनक वरण काया जिसीरे लोचन अमिय कचोल चंपकली जिमनासिकारे पिकवांणी जिमवोल भ० सा० दशन अनार कुली जिस्यारे अधर प्रवालनूं रंग चंद वदन शारद

 ॥ ३० ॥

लिखोरे कलटख करपद चंग भ० सा० अंग उपांग सोहामणारे विनय विवेक प्रधान धीर गंभीर सौजन्यतारे शील रतन गुण खान भ० सा० मात पितानां कथनमांरे पाले ते निश दीश हुकम कह्यो नही लोपतारे आज्ञाकारि जगीश भ० सा० कहे इन्द्रचंद ए दूसरीरे तीजा खंडनी ढाल आगल वात रसाल छेरे सुणज्यो थई उजमाल भ० सा० ॥ ६ ॥

दूहा

एम अनुक्रम तिण समे वुध सिंह सुत परताप। भणी गुणीने ते थयो वालोचर पुर छाप ॥ उगंतो जिम झाल हुले तेजें करि दिनकार। चमत्कार तिम तेहनो लघु वयथी जगसार ॥ वाल पणांथी तेहने गुरु संगति परसाद। लगी लगन ते धरमनी तजी सकल विखवाद ॥ तीन काल दरसन करे जिन मंदिरमें जाय। चैत्य वंदन पूरो करी पांचे अंग नमाय ॥ वलि गुरु पासें जायनें करे सूधो पचखांण। आठे दिन नवकारसी तिथने पोरसिजांन ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ३ ॥ वाडी फुली अतिभली एदेशी ॥

जिम जलधर चितमोरने भवि प्राणीरे चंद चकोरने जेम सुणो भवि प्राणीरे कमला दिल गिरधर यथा भ० चकवी दिन

वार प्रेम सुणो भ० ललनां कामी मनवसे भ० लोभी मन धनमांहि सुणो भ० रत्नत्रयी जिममुनि मनें भ० ग्रीखम तप तने छांह सुणो भ० तिमते प्रताप सिंहने भ० मन वसियो जिन धर्मं सुणो० समकितनी रचनां रचे भ० तजि मिथ्या मति भर्मं सुणो भ० दानशील तप भावतें बेद भेद सुषकार सुणो० दुरगति पड़ता जीवने भ० धरम ते धारणहार सुणो० उचित कीरति अनुकंपना भ० अभय सुपात्र बिचार सुणो० प्रवचन मांहै भाषिया भ० पांच ए दान प्रकार सु० निरमल नववाडै करी भ० शील रतनछै अमोल सु० भेद अनेक सिद्धांतमें भ० शासन नायक बोल सु० तपनां भेद कह्या घणा भ० अथवा द्वादश भेद शु० श्रीमुख जग गुरु वरणव्या भ० आगम मांहि उमेद सु० भव वनकी जे भरमनां भ० टेहने टालेरे भाव सु० सब किरिया सिणगार ते भ० भाव ते भव जल नाव सु० तीजी तीजा खंडनी भ० कहि इन्द्रचन्द ए ढाल शु० दूजा अधिकारे ए सही भ० शुणो तुम बाल गोपाल शु० ॥ ९ ॥

दूहा

च्यार घड़ी बाकी रहे पिछली राति जिवार । उठी कुमर परताप ते जपे मंत्र नवकार ॥ चरण कमल सदगुरु तणां

॥ ३१ ॥

पूजे नित परभात। दरशन करि जिन राजनो सुणै शास्त्र विख्यात॥ प्रगट एकादिन तक सदा मन धरि भाव अनंत। धरम करै चित चूंपसे त्रिकरण अति उलसन्त॥ जिन शासन परभावना करै सदा मनलाय। समकित पादप सींचता समता रंग लगाय॥ श्रावक व्रतकी खप करे कर निरमल परिणाम। गुण गाहक गुणवंतनी सङ्गति करे अभिराम॥ ५॥

ढाल॥ ४॥ जगनां तारू मुझे तारोरे कृपानिधि स्वामी॥

॥ ३२॥ तन मन करि चित चोथें दांन सुपात्रें देवेरे समकित रागी जीव सकलने अभयनो दाता मुगति मारगनें देवेरे समकित रागी तुम सुणोरे चरित्र पुण्यवन्तनो॥ ए आकड़ी॥ परतिरियाकुं निजर नदेखे निज दारा सन्तोषीरे स० शील रतनका जतन करे इम आतम गुणकी पोषीरे स० तु० बरत तपस्या काया शगते भेद विविध परकारीरे स० निज इच्छा अवरोधन करके निरमल चित इकतारीरे स० तु० सञ्चित पाप षपै पूरवनां करत नया नवि आवैरे स० कञ्चन जीवने उज्जल होवै तप अगनी परभावेरें स० तु० बारह भेदे भावनां भावे भव दुख भंजन हारीरे स० नाम अनित्यादिक ते जांणो भाषा जिन गण धारीरे स० तु० इम चिहुं भेदे तेह कुमरजी धरम करे मन राजीरे स० जाको मन जाहीसें लागो कहो तिहां कांई ॥ ३२॥

करै काजीरे स० तु० निश बासर तुम धरम करतां मनमें हरष नमावैरे स० सात षेत्रमें धन षरचावै सुखमें काल गमावैरे स० तु० शिशुता अमर गई तब आई यौवन वय ठकुराईरे स० नाबालकसे भये साबालक कहै तुम साजन भाईरे स० तु० तीजा खण्डनी ढाल ए चौथी कही इन्द्रचन्द्र मन लाईरे स० आगे वात कहे बहु मीठी सांभलजो सुखपाईरे स० तु० ॥ ८ ॥

दूहा

२३ ॥ एम अनुक्रम तिणसमे तेह कुमर परताप। थयो अठारह बरसको यौवन वय तनु व्याप॥ क्रोधमान माया नहीं लोभन एक लिगार। कूड कपट नहि कुटिलता नहि निन्दा व्यवहार॥ सापुरसां सिर सेहरो दातारां सिरदार। चतुराई चित चौगुणी धन धन कहै नर नार॥ भाई बिरादर सबमिली सगासणीजा लोग। कुमर प्रताप बिवाहनो करवा लगन संजोग॥ तेड़ाई जोसी प्रतें चोषो महुरत देष। सजन सबे भेला हुवा मनमें हरष विशेष॥ ५ ॥ ॥ २३ ॥

ढाल ॥ ५ ॥ चीतोड़ी राजारे एदेशी ॥

दिन आछो जोईरे हरषै सहु कोईरे करै सोई सवल्यारी व्याहतणी मुदारे मीली रंगावैरे वेह तोफी बजावैरे गीत गावैरे

सोहा गण मिस धन ते सदारे १ नानाविध वागारे दरजी सीवा लागारे हाथें सूईनें तागा लेई सीवतारे जामा जं हा पे-
जामारे छोटनें चपकान नामारे वरे वेठा ते जामा सुखथी जीवतारे २ सोना रूपाला गोटारे चमके बहु मोटारे तिलमा
वते घोटा नही आयो तुमे रे लहेस पट्टा किनारीरे गहा जमनो सारीरे बहुभारी तेलेबूवनतमे गमेरे ३ चमकीने सालमा-
रे लामे सहु तुलमारे कलावत्तूनें वादला कनक रूपा तणारे काम अद्भुत करतारे जरदोजी भरतारे मन च.दर धरता उत्तम
ते मणारें ४ सोनार ते सूरारे सगला गुण पूरारे घडे घाटसनूरा नाना भातिनारे नग जडता जडियारे कुन्दनमे घड़ियारे
कुंदन ऊपर चडिया नव नव जाति नारे ५ पोसाष सुहावेरे गहणा मन भावेरे सव चीज वनावे व्याहने कारणेरे उच्छव बहु
थावेरे मंडाण मंडावेरे घणालोक ते आवे जावे वारणेरे ६ वड़ा दाल वटावेरे मूंग वड़ी पड़ावेरे दली पापड़ करावे घरमें सो-
कलारे जोजो वस्तु चाहीजेरे ते सवही करीजेरे घर हवने पूछीजे रीतनी जो कलारे ७ कड़ाई चढ़ावेरे गीन्दोडा थपावेरे सहु
जातमे टीरावे घरघर ते सहीरे सेधनादोंडू वारियेरे ऊज्जल रंग धारियेरे कुण रीतें आचरिये मनमे गह गहीरे ८ पुण्यवन्तने
राखेरे तीजे खण्ड भाषेरे ढाल पञ्चमी प्रकाशे कृष्ण अधिकारमेरे कुन्दनचन्दनी वाणीरे सांभलो भवि प्राणीरे वली आगे गुणखाणी

॥ २४ ॥

॥ ३५ ॥

वात विचार मेरे ॥ ८ ॥

दूहा

धूम करतां दिन आवियो टीकाको सुखकार। ओमय करियो कुमतिसें जाति तणो व्यवहार ॥ कुमर प्रते पहिरावियां पट आभूषण सार। तामजांममें बेसिया साथे बहु परिवार ॥ हाथी घोड़ा पालखी आगें तुरकसवार। चामर छत्र विराजता मङ्गल गीत अपार ॥ वाजा ताजा वाजते वांच निशाण हजार। सुभटसेनसें परिवर्‍या गये ससुरके द्वार ॥ करी प्रशंसी आविया कुमर आपणे गेह। व्याह काम हाथे लियो चितमें हरष धरेह ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ६ ॥ हाजरनी देशी ॥

हिवते कुमर प्रताप व्याहनें करवाको उजमाल ते थया करि आलाप संलाप कुटुम्ब सगाईको सह्न भेला भया १ पाकी पोसाष बनाय विरादरी माहेको सगलाने दीया मंद मीठाई कराय छोटा मोटाको मशोना दोडू कीया २ जीमे सगला लोग गावी गावेको बोले सधव लुगाईयां श्रीफल पांन संयोग मनगो मोजीको सहूने दिवाईया ३ तिलक कंकूनो करंत तंदुल मांथें

हो चेटे शोभता दिनकर किरण अनन्त निषधा चल परहो मानू ऊगता ४ डुम मोटे मणडाण दूध पिलाईहो हरष थकी करै भाई वंध सुजांण गोद लिखिलाई लावै वहु परै ५ दूण परिविधि सहु कीध तव तिहां आव्योहो दिवशा निकाशीनो दुनियां मै परसीध करीय तयारीहो फूलर वासीनो ६ गज रथ सुभट तुषार कीनी सजाईहो अति धूम धांमयी कुमर कियो शिणगार सेहरा बांध्याहो शुभ परिणामथी ७ कुमर थयो असवार दिणकर वाहनहो चपल नचावता आगल जांनी अपार स्वसुर दुवारें हो अनुक्रमे जावता ८ तीजा खण्डनी ढाल इम अधिकारेंहो छट्ठी एकही इन्द्रचन्द्र गुणमाल आछी वाताहो आगेके सही ॥ ९ ॥

दूहा

तोरण वांध्यो तिण समें सिंघ प्रताप कुमार। विधि पूर्वक विधि सव करी सासूइं तिणवार॥ छूटे आतसवाज़िया अद भुत धूआधार। उच्छव रंग वधामणा हरषया नरनें नार॥ लगन समय आव्यो तदा व्याह करणके काज। चवरी मांडी चूंप सें अनुपम सुखें समाज॥ वर कन्या पधराविया मंडप रहि मझार। वेद विचक्षण पण्डितें अगनि साष निरधार॥ व्याह करायो जुगतसे शास्त्र तणें अनुसार। साते फेरा फेरिया तव तिहां रङ्ग अपार॥ कर मोचन बेला-घणा मणि मोती पट-

॥ ३६ ॥ ॥ ३६ ॥

कूल । गज घोड़ा कांचन प्रमुख दासी दास अतूल ॥ दीधो बहुलो दानजों कहता नावे पार । याचक भये अजाचिया बोले जय जयकार ॥ ७ ॥

ढाल ॥ ७ ॥ धरम जिनेश्वर गाउं रंगसु एदेशी ॥

॥ ३७ ॥ इणविध व्याह करीनें कुमरजी भरच्या द्रव्य अपार शोभागी उच्छव रंग वधाई अति घणी वरत्या जय जयकार सो० इ० याचक भोजक भाट भिष्यारीनें ब्राह्मन अवर अनेक अन धन वस्त्र दीया मन भावता दिलमें धरीय विवेक सो० इ० करीय विदाई स्वसुर घरें थकी वाजा गाजा समेत सो० वर बहू बेठा दोनु पालषी भाइ बंधू सहित इ० साथे सधव लुगाया गावती जीत्या जीत्या ढाल घुराय सो० इण आडंवर आव्या निज घरें सब कोइ राजी थाय सो० इ० करी पकवांन वरात जिमावीय देई श्रीफल हाथ सो० पांननें रूपीया तिलक करी तदा विदा किया सहुसाथ सो० इ० पाछे गोत्रज देवी देवता पूज्या सोलमनाय सो० वासक्षेप कीयो बहु आदरें पासें गुरुजीनें जाय सो० इ० चौवारिको नेग कीयो पछे जूवा जूइ खिलाय सो० वर कन्या कंमार आरोगीया आणंद अंग नमाय सो० इ० एहवो व्याह कीयो मन मौजमें दूगड़ सिंह पर-

ताप सो० दुनीयां मांहि जस लीधो घणा बालुचरपुर छाप सो० इं० सातमी ढाल थई रलियामणी तीजे खंडे एह सो० कहे इन्द्रचंद भविक तुम सांभलो मन धर धर्म सनेह सो० इं० ॥ ८ ॥

दूहा

बाबु साहेब सेठजी दूगड़ सिंह प्रताप । तेहनी घरणी जांणिये नाम कुंवर महताप ॥ सीलवती सुखकारिणी रूपैं रंभ हराय । शुभ लच्छन सब अंगमें कहतां पार न पाय ॥ जिण दिनथी घरमांहीमें सेठानी पग दीध । तिण दिनथी घर सेठके रिध सिध नवनिध ॥ पति अनुरागी पतिव्रता सेठाणी महताप । मुखथी मीठे मुख बोलतां परतख सरसती आप ॥ ओ पमा चंद वदन सही दृग कमलैक समांन । चंपाकलीसी नासिका अधर ते विद्रुम कांय ॥ धरम करम नित आगली परम पुनीता जेह । जिणरे घर नारी इसी पुन्यवंत नर तेह ॥ ६ ॥

ढाल ॥ ८ ॥ चन्द्राप्रभु प्राहुणो रहेसी ॥

ध्याव कीजो करनी भावनाइं रे अगमांहि वस पोठीया दूगड़ परताप सिंह जीरे मनक मनोरथ सीधो घरा० दम्पती सुण्या

मननमें रे सुषविलसे भिम दोमरे धर्म कर्म दोनु करेरे रात दिवस सुजगीसरे वा।० करे सामायक प्रातमें रे पडिकमणा दोनु टंक करे पखशर पोसह आदरेरे जिनपूजे त्रिकालरे वा।० दान सुपात्र दिवतारे जीवने अभयनो दानरे साधर्मी भगति करेरे गुरु पुजे बहुमानरे वा।० सातखेत्रे धन वावरेरे नवपद भगति उदाररे सुगुरु सुदेव सुधर्मनीरे मनमें राग अपाररे वा।

॥ २९ ॥ राग द्वेष मनमें नहीरे नहो कोई पखपातरे सेठ सेठाणी दोनु जणारे दूर करे मिथ्यातरे वा।० जिन शासन परभावनारे ॥ २९ ॥

करे सदा मनलायरे व्रत पचखांणमें तेहनारे दिन दिन हरष सवायरे वा।० तीजा षंडनो आठमीरे ढाल कही इन्द्रचंदरे सुनतां श्रोता मनतणोरे दूर करे दुख दंदरे वा।० तीजोखंड पूरो थयोरे सुन्दर इण अधिकाररे वक्ता श्रोताने घरेरे आनंद हरष अपाररे वा।० खण्ड खण्डोमीठाई देष देव थया सगला अनिमेष भाव धरी सुणे जनसार ते सहो पावे भवजल पार ॥

॥ इति श्रीपुण्यपवित्र प्रतापचरित्रे तृतीयः खण्डः संपूर्णम् ॥

॥ श्रीमद्भगवती सिद्ध चक्राय नमः ॥

बाबू साहेब

।। श्रीमत् प्रताप सिंह चरित्रम् ।।

चतुर्थ खण्ड

।। अथ चतुर्थखंड ।। नित उठि प्रणमु भावसे जिनवाणी जयकार। पाप हरे भव भव तरण सुख सम्पति दातार ॥ परम ईष्ट पांचे नमूं जोहै मङ्गल मूल। चौदह पूरब सारहै भवजलनिधिनोकूल ॥ ग्यांन पदारथ जगतमैं ग्यांन परम पद देह। ग्यांन विना पसु सारखा नर भवपायो जेह ॥ मति श्रुति अवधि प्रमुखजे जगमें जालम जोर। प्रणऊ सम पांचू ग्यांनने वंदना करू करजोर ॥ गुरु गुणवंता गुणनिधी अनुभव दायक जेह। श्रीपारसचंद सूरिंदने धूरि प्रणमूं हूं तेह ॥ दूगड़ सिंह प्रतापनो सुंदर रास रसाल। तेहनो चौथोखंडए कहिसु थई उजमाल ॥ सावधान थई सांभलो श्रोता समकितवंत। निद्रादि विकथा परिहरी मन धर भाव अनन्त ॥ ७ ॥

ढाल ॥ १ ॥ गिरवारे गुण तुम तणा एदेशी ॥

इम सुखसेती सेठका आनंदमें दिन जावैरे चिहुं दिशि भूमंडल बिषे नाम प्रगट बहु थावैरे इ० रंगपुर दिनाजपुर मालदे कूंचबिहार कहावैरे कलकत्ता जङ्गीपुरें शिराजगञ्ज सुहावैरे इ० इत्यादिक बहु जगे कोठी सेठ करावैरे हुण्डी पत्तरी लेना देना आढ़त काम चलावैरे इ० पुन्यप्रसादे सेठके जमीदारीवधे आईरे लाषां रुपैया उपजता जगमैं सुजस सवाईरे इ० सेठ का राज दरबारमैं मांनमहातम जांनेंरे जात बिरादरी मांहिनै हाल हुकम सब मांनेंरे इ० अकलवड़ी सेठमांहिनें मनसोबा

॥ ४१ ॥ वड़ी भारीरे हुकम कोइ लोपै नंही मांनें दुनिया सारीरे इ० कुलमरजादमें चालतां पापके पन्थ न जावैरे जश वंशमैं एहवो ॥ ४१ ॥

धर्मी सब कोई कहावैरे इ० अपणें देशका आवता जात बिरादरी कोईरे उसकु अन धन देयके इजत वढ़ावे सोईरे इ० चौ-था खंडनी ए हुई पहली ढाल सुरंगीरे कहे इन्द्र चन्द श्रोता सुणो आगल बातछे चंगीरे इम० ॥ ८ ॥

दूगड़ सिंह परतापको पूरव पुण्यपंडूर। दुनीया मांहे दीपता दिन दिन चढ़तेनूर॥ मुख सोहैं सारद शशी अष्टमी शशी समभाल। मीनयुगल दृग जांणीयें मानूं अधर प्रवाल॥ चंपकली सम नाशिका दाड़िमदाना दन्त। ग्रीवा सङ्ख

समान जस मुख धनि घन गरजन्त ॥ रूप अनुपम सेठका कर पद लक्षणवन्त । धीर गम्भीर उदार अति सकल कला मिल सन्त ॥ शूरत सुन्दर सोहनी मूरत मोहन बेल । सोभागी सिर सेहरो [illegible] मां निधि गजगेल ॥ ५ ॥

ढाल ॥ २ ॥ वींछीयानी एदेशी ॥

हांरे लाला इक दिन सेठ प्रतापजी कीयो मनसूबो मन एकरे लाला परगणा देषूं जायके जमीदारी मेरी अनेकरे लाला इ० हां० मेरे बिगर गये तांहा नंही कांम होवेगा ठीकरे लाला षेती सन्देसां नंही हुवे ए कहवत नही ते अलीकरे लाला इ० हां० तुरंत बुलाया जोतशी कीयो मुहूरत आच्छो शुधरे लाला करी तयारी गमनकी साध्यो लगन तिहां अविरुधरे लाला इ० हां० साथे लीया घणा आदमी हुवा पालषीमें असवाररे लाला माथे छत्र धरी जती आगें छड़ीदार चोपदाररे लाला इ० हां० प्रथम गया ते रंगपुरे पीछे दिनाजपुर मांहिरे लाला नजराणा सवसें लीया इसमें संदेह नांहिरे लाला इ० काम काज उहां देषके पीछे गया कूचविहाररे लाला अपणी कोठी मांहिनें जाय उतरा सेठ तिवाररे लाला इ० राजा कूचविहार का सेठजासें मीलवा काजरे लाला आयो आप चलायके वडे धूम धाम समाजरे लाला इ० उहांसें पीछे गये मालदे बाबू

॥ ४२ ॥

साहब अति मनरंगरे लाला सुषसेती केइ दिन रह्या काम साझ्या सब सुभटंगरे लाला इ० चौथे खंडे दूसरो ढाल हुई इण अधिकाररे लाला कहे इंद्रचन्द आगे घणो छै संबंध अति सुखकाररे लाला इ० हां० ॥ ६ ॥

दूहा

मौजा फिरके देषियो सेठ अपणा सर्व। रईयत सब दाखल कीया निजराणेका द्रव्य ॥ रुपीया जो आया जहां निजराणेका लेय। विदा कीया रईयत प्रते सबकु खुसी करेय ॥ हाल हुकम वरतायके अपणा दखल जमाय। उहांसें हिल मिलके चले पौंछा रंगपुर आय ॥ करी तैयारी सफरकी अपणे घरकीओर। वाहन पर चढ चालीया खुसकी रसता छोर ॥ हुकम कीया नइयाप्रते नइयाकुं तिणवार। वाहन चलावो बेगसें न करो देरलिगार ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ३ ॥ रहो ४ बालहा परदेशी ॥

आच्छी बेला मांहिनें नईया लङ्गर उठाय लालरे नाव चलाई सितावसें पद्मानदी सुखदाय लालरे आ० लंबा पालते तांणीया पवन चली अति जोर ला० पद्मा कल्लोलि चढी करतीबहुत ते सोर ला० आ० ढेउ घणा तेहां उठीया छोटा मोटा अनेक ला०

॥ ४३ ॥

ऊंचा नीचा दोड़ता मिलता एकथी एक ला० आ० उठी उत्तर दिश थकी स्याम घटा घन घोर ला० गगन तलें कादंबनी छाय रहीचिहुंजर ला० आ० आंधी चली अति जोरसें सुझे नही आस पास ला० अव्यक्त शब्द करे नदी रेणुचढी आकास लालरे आ० चञ्चल अति पड़ा भई कुलटा चित जिम नूर ला० पानी अतिझोले चल्यो दोनुं तट भर पूर ला० आ० चमकन लागी बिजली नभमें करती आवाज फा० वादलमांहि दोडती जबर हुवो घनगाज ला० आ० नावते जलकी जोरसें हुई तिहां डमडोल ला० घबराया नईया सबे देष नदी कल्लोल ला० आ० तीजी चौथा खण्डनीहुई ढालते एह लालरे श्रोता सब सुनजो तुमे इन्द्रचंद कहैं जेह ला० आ० ॥ ९ ॥

दूहां

दसूं दिसामें पसरीयो महाजबर अंधकार। कोईने कोई सूझे नही लोक करे पूकार ॥ जब देष्यो उत्पातते सब नईया मल्लाह। नाव नदीके विचमे पांणी जहां अथाह ॥ षतरे आती देषनें नावने नईया तेह। कीसो उपाय करां इहां माथे वरषे मेह ॥ अंधर चाल्यो जोड़से नाव डगा मग होय। घणो उपाय कर्यो तिहां कलालगी नही कोय ॥ बाबू साहबने

कहासत नईया करजार। नाव बचैं नंही कोई विधैं हम कहि करता सोर ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ४ ॥ भविकाको ॥

बाबु साहब संबर लीया मनमें भावना भावै धरम प्रताप सकल सुख होवै धरमैं सब दूष जावैरे भाई। धरम करो सब कोई धरने सुर बस होईरे ध० ॥ ए आंकड़ी ॥ सागारी अनसन तिहां लीनो सामायक लेइ बैठा नवपद ध्यांन धरयो
॥ ४५ ॥ मनमांहि अवर तज्या सहु ठेठारे भा० ध० कोई शंकर कोई विधाता कोई जपत मुरारा कोई उपासक देवी ना जांणो ॥ ४५ ॥
कोई पीर पुकारीरे भा० ध० कोलाहल मचीयो तिहां भारी लोक हुवा बका भेला पिण उतपात मिटे नंही कोइ भैचक भया तिण वेलारे भा० ध० ध्यांन अचल तिहां सेठ लगाया तन मन बस कर अपणा जाल जंजाल तजि तिहां कीनो देव गुरुका जपणारे भा० ध० सब कोई सेठने कहवा लागा हरी हर ध्यांन धरीजे जैन धरमने जो तुम छोड़ो तो दूख दूर हरीजैरे भा० ध० तो पिण सेठजी अपणा मनमे धर्मको निश्चे राख्यो कोइका कहना नही मांना पीछे जसर भाख्योरे भा० ध० जो कुछ होवे सोई होवो धरम तो हम नही छोडि इतनी कहते नइया बोल्या सब मिल हायने जोडीरे भा० ध० दूष अधिकारमें ए

भई पूरी चौथी चोथै खंडे ढाल कही इन्द्रचन्द श्रोताने धरम थकी वीलिसंडेरे भा० ध० ॥ ८ ॥

दूहा

थांरे धर्म प्रतापसे सुणो सेठ महाराज । लागो थाह अभाग्रगी सुधर्या सगला काज ॥ विचे नदीका मांहिनें जद्दी कोई आधार । इस अंधड़ तोफानमें जलमें भयोपगार ॥ बाबूसाहब देवीयो उठके आपो आप । जलमें थल दीसें इहां प्रगट्यो पुण्यप्रताप ॥ नइया लागा गाड़नै बांधी नाव तिवार । सेठजी अवसण पारीयो मनमें हरष अपार ॥ सब कोई कहनें लगे धनर सेठ सुजांण । थांके धर्म प्रतापसे सबका वचीया प्राण ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ५ ॥ कुंथु जिनमनडो० एदेशी ॥

नवपदनो तिहां जाप जपता विघन टल्या ततकाल सब कोईंता राती हुवा दूरगया अञ्जालरे० साजन । पुन्य जबर जग मांही इसमें संसय नांहीरे सा० दसूं ककुपति निरमल हुई आरी साज्य आकाश पवन प्रकोप मिट्यो ते सवही जलधर गयो सव नासरे सा० पु० सेठजी हुकम कीयोनइयामे चालो नावने खोली ने पिण हुकमने साथै चढावी मिल कर नइयानी टोलीरे

॥ ४६ ॥

सा० पु० कुशल खेमसें तिहांथी चाल्या करता हरष आनन्द पद्याना कल्लोल तें आता मच्छ कच्छपना वृन्द सा० पु० उत्तम पवन पच्छमको चाली नइया पाल उड़ाया जलदृसीज्यूं चाले नौका आगे टापु नजर हुआ आयारे सा० पु० जलचर जीव घणा टापुमें फिरता आमा सामा एक जीनावर तेहमे देषी बहुत बड़ा आयामारे सा० पु० तेहने देषी सब कोई डरिया थर थर धूजन लागा सेठजी नवकार मंत्र जपीयो तुरंत जिनावर भागारे सा० पु० इम देषी चकित हूवा सब मनमें अचरिज

मांने परतिष परचो सेठनो देषी धन धन मुखथी वषांणेरे सा० पु० ढाल पांचमी कही इंद्रचंदें चौथे खंडे ऐसी श्रोता जननें सुणवा सारू वात साचीहैं जैसीरे सा० पु० ॥ ८ ॥

॥ ४७ ॥

दूहा

कुशल खेमसें सेठजी घर आए भली भांत। नेकर चाकर कीया विदा घर अपणें सहु जात॥ लाभ दुवड़ियो देषनें वरमें कीध प्रवेश। न्याती गोती आपणा आया मिलन हमेश॥ सफल फली मन कामना सुख मांहें दिन जाय। धरम करै मन चावसें जेहथी पाप नशाय॥ इम करता केइ दिन गया सेठ तणां मनमांह। इकदिन बेठे मोजमें इसो f

चार वारांइ ॥ पुरणियांहा परखना अलदु देपु जाय । ता सब वात बनें भली अगमें सुयग सुवाय ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ६ ॥ रामचंद वाग चंपो मोही रह्योरी एदेशी ॥

इम सिंह प्रयाण सयत शुभ लिवेरी चाले पूरणीये भव जाचक दान दीयेरी । खासा सोटा सङ्ग चामर छत्र भवारी मनमें बहुत उमंग सब कोई साथ चवारी । गज रथने वली ऊंट घोड़ा सवार घणारी पालखी परम अनूट लूंबा झूंब बनारी । ऐसें बहु परिवार साथें सेठ गएरी मनमें मोद अपार पहुचे पूरणीयेंरी । अपणी कोठी मांह दाखल सेठ भयारी काम काज करवांह कानद पत्र नयारी । परगणा देवण काज तिहांथी आगे जावेरी जमीदारीसे साज रइयत सब आवेरी । नजराणा भर पुर सनमुख आय धरेरी करजोड़ो रहत हजुर सब कोइ हरष करेरी । हाल हुकम सब सेठ उहां पर खुब किधरी अरखा दखल जमाय सुजश ते बहुत लियारी । चौथे खंडे एह ढाल ते छट्टी कहीरी इंद्रचंद ससनेह श्रोता सुणज्यो सहीरी ॥ ६ ॥

॥ दूहा — करी तयारी चलणको उहांसेती सेठ आप । मिलणेकुं आया सही पूरणीयेका नवाब ॥ सरिता कोसी

|| ४९ || जोरसें नित वहैं निरमल नीर। जल झडा गहरा बहुत जलमें थलमें तीर ॥ पार उतरके सेठजी आगे गए बड़ी दूर। आछी जागा देषनें डेरा दीयाजरूर ॥ उहां पर अपणें नामको गंज बसायो एक। हाट हवेली बहुतहै अवर बजार अनेक ॥ जिनमंदिर इकरू बडो पासें एक पोसाल। बनवाया अति चपसें सेठ थई उजमाल ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ७ ॥ आशणारारे योगी एदेशी ॥

सेठ प्रतापगंज बसाया अपणा नाम दीपायारे सुणो भवियन भाई बिंब प्रतिष्ठा आछी कराई जिनमंदिरमें पधराईरे सु० एक अनुपम बाग लगाया जिन पूजामें फूल चढ़ायारे सु० साधर्मी नी जिमणकीनो लाभ घणो तिहां लीनोरे सु० कोठी करी तिहां साहूकारी जमीदारी कचेरी न्यारीरे सु० सब कोईने राजी कीना यथायोग सिरोपाव दीनारे सु० एक अंगरेज नें नोकर राष्यो जमीदारीनो काम ते दाष्योरे सु० सब भोला मन उसकु दीनो सगलांसें निजरां लीनोरे सु० पीछा सेठजी सहरमें आया सब कोई ते सुख पायारे सु० अण चाही घणी जमीदारी आइ ततोपुर वली पुन्याईरे सु० अब देषो सेठकी धरमकी करणी परतिष भव दूख हरणीरे सु० पावन थईनें भावना भाते नित जाप जपें परभाते सु० च्यार वडी || ४९ ||

दिन जब चढ आवे जिनमंदिर सेठजी जावेरे सु० विधिसेती परदखणा देता सेठ जनम सफल करलेतारे सु० करजोडी प्रभू सनमुख जोता भव भावना पातिक खोता सु० सेठजी पांचूं अङ्ग नमावे चैत्य वंदन कर गुण गावेरे सु० इण अधिकारे ढाल ए भाखी चोथे खंडे सातमी दाखीरे सु० कहै इंद्रचंद वचन चतुराई सुणो श्रोता सब सुख दाईरे सु० ॥ ९ ॥

दूहा

दरसण कर जिनराजका आए सेठ सुजाण। पासे पोसहशालमें सुणवा सूत्र वखाण ॥ गुरुजी देवें देशना जलधर धुनि गंभीर। निश्चल थिर सांभले श्रोतासर्व सुधीर ॥ भव सन्ताप निवारणी आगम अगम अनन्त। अविनासी सुखदायनी शिवसुखकारणअनन्त ॥ सूक्ष्म तत्व विचारणी जिनवाणी निकलङ्क। गहन पदारथथी भरी परमारथ निशङ्क ॥ भाव धरी मनमांहनें सुणें सेठ मनलाय। सदगुरु अमृत सारखी धरम कथा कहवाय ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ८ ॥ आजनिहे जोरे दीसें नाहलो एदेशी ॥

सदगुरु देतारे धरमकी देशना जैसी साकर मीठीरे श्रोता श्रद्धासेती सांभले मिसरीसो दीठीरे श्रो० दुरलभ मानुष ज-

॥ ५० ॥

नम लहो करी विरधा जिनही खोवैरे जिन भाषित जे साचा सारद्दहै आप सरूप ते जोवैरे भ० पड़िकमणा पोसह सामायकें जे नर दिवस वीतावैरे नवकारसी पचखाण प्रमुख करे भवनो पार ते पावैरे भ० भाव धरी जो तीरथ करै विधिसें छहरी पालैरे धरती सूवैरे सचितन छूवतां नारी सङ्गत टालैरे भ० जिन मंदिर जो तीरथ ऊपरे नवोनो पावे कोईरे सदगति पावे रे ते निश्चय सही दुरगतिनो नही होईरे भ० जिहां तिहां जिन मंदर जो वनावतां पुण्यवंत नर नारीरे इह भव पर भवसुख सम्पत्ति लहै भावे जिनगण धारीरे भ० शुभ वधावे पूजा निमामो करै जिन पड़िमा जो भरावैरे तेहनो जस कीरति अति विसरें शुभ गति पावैरे भ० जीर्णोद्धार करावे जो सही तेहनी हूं बलिहारीरे निकट भव्य तो तेहने जांणिये उभय लोक सुखकारीरे भ० चोथे खंड ए पूरण कोयो तेहनो आठमी ढालरे कहै इन्द्र चंद श्रोता वक्ता घरे नित मंगल मालरे भ० ॥ ६ ॥

खंड खंड मीठा गुण ग्यांन । कवि जनका शुभो वचन प्रमांण ॥ करै धरम काजे अनुमोद । सोजन पावें बहुत प्रमोद ॥

॥ इति श्रीपुण्य पवित्र प्रताप चरित्रे चतुर्थो खंडः संपूर्णम् ॥

॥ ५१ ।

॥ ५२ ॥

॥ श्रीमद्भगवते सिद्धचक्राय नमः ॥

बाबू साहेब

॥ श्रीमत् प्रताप सिंह चरित्रम् ॥

पञ्चम खंड:

दूहा

श्रीचिन्तामणी पासजी वाञ्छित पूरणदेव । सुर नर नायक जेहनी नित प्रतिसारे सेव ॥ श्रीसावरियां पासजी श्रीसङ्केश्वरपास । श्रीगउड़ीचापुर धणी सफल करे अरदास ॥ सहस फणा प्रभू पासना नाम सदा पूजनीक । दुरत हरे मंगल करे नाम प्रभूनो ठीक ॥ पांच नाम ए पासना करी मनमांहै याद । सरसतिने प्रणमी करी सदगुरुने परशाद ॥ दूगड़ सिंह प्रतापनो पावन पुण्य चरित्र । तेहनो पांचमो खंड ए कहिस्यूं परम पवित्र ॥ ५ ॥

ढाल ॥ १ ॥ नगर मझे नणदल चूड़लै योवन झोल रह्यो एदेशी ॥

भविजन हो भविजन धरम करो जिनराजना जहथी भव दुख जायहो भ० मन वंछित फल संपजै जश कीरत बहु थाय
हो भ० ध० दश दृष्टांते दोहिलो नर भव मिलियो आयहो भ० धरम सामग्री लही करी इसकुं वृथा न गमायहो भ० ध०
तिहां परताप सिंह सेठजी मनधर निरमल भावहो भ० सदगुरु देशन सांभली आनन्द अङ्ग नमायहो भ० ध० कोई करी
नौकारसी पोरसी केई उपवासहो भ० आंबल केई एकाशणा करे पुरमढ दुख मास हो भ० ध० देशना सुण सब परषदा
॥ ५३ ॥ जिम आई तिम जायहो भ० परताप सिंह पिण सेठजी अपणे घरमें आयहा भ० ध० इक दिन सुता सेठजी आधी रात
मझारहो भ० उठ कर बैठा सेजमें मनमैं करै विचार हो भ० ध० तीरथनी यात्रा करुं वोहीहैं नर भव सार हो भ० जिं- ॥ ५३ ।
द गानी सफली करूं तो होय भवनो पार हो भ० ध० महुरत आछो जोयनै तीरथ करवा जाय हो भ० सङ्ग साथ बहू सा-
मठा जाचक दांन दिवाय हो भ० ध० पांचमा खंडें ए भई सुंदर पहली ढाल हो भ० कहै इंद्र चंद श्रोता सुणो आगै वात
रशाल हो भ० ध० ॥ ८ ॥

दूहा—पहलो पावापुर गए भेटै वीर जिणंद। जल थल मंदिर निरखके पांम्या परमाणंद॥ उहांसे फिर गए सेठजी गुण सिल चैत्य मझार। जल मंदिरमें नाथका पूज्या चरण उदार॥ राजग्रही उहांसें गए फरसें पांच पहार। जनम सफल अपणो गिणें मनमें हरख अपार॥ बडा गांममें आयने वेभारापुर आय। दरशन कर परसन भये सेठ सकल समुदाय॥ वासु पूज्य जिनराजका जिहां कल्याणक पंच। सेठ गए चम्पापुरी परिहर सब षलवंच॥ ५॥

ढाल ॥ २ ॥ कुंवरीयाने गाजेहो भटियाणी राणी वडचूवे एदेशी ॥

वासुपूज्य जिणवरना हो कल्याणक पांचें जांणिये चम्पापुरने मांह, भाव धरीने भेट्या हो परताप सिंह दूगड़ सेठजी ज्यामें संशय नांह वा॰ अष्टप्रकारी पूजाहा तिहां करी अतिचूपसें अने वली सतर प्रकार, मांनव भव सुकरथ हा तिहां करीयो अपणो सेठजी खरच्या द्रव्य अपार वा॰ कुशल छेमसें आएहो घर अपणें पीछा सेठजी वरत्या जय जयकार, सद्गुरुने वाकीनी हो वली धन धन वमतर देयने साहमी वच्छल सार वा॰ षूब ते लाहो लेवे हो नर भवनो इण विध सेठजी धन धन कहे सब लोग, धरमकी करणी करवाहो वन आवे इण भव जेहनें जो हुवें पुण्य संयोग वा॰ देश बंगाले मांहे हा कोई न हुवो न हवे

॥ ५४ ॥

नहोयसी एहवा महाजन काय, जग चौर चोरत केहनो हो हणो जाय रही चिहुं दिश जिणे एहमे चूक न होय वा॰ इक दिन सेठजी मनमें हो मनसूबो एसो विचारीयो करूं संवरको काम, आश्रवनाखोरोकुं हो जिम निरमल होवे आतमा पुरूं मनना हांम वा॰ नर अवतारमें मांहि होएसार पदारथ भाषीयो साचो धरम निग्रंथ, अवर निकम्मा जांणो हो संसारमें माया जाल में साधो शिवपुर पंथ वा॰ देव अवर सबका चाहो इक साचा जिनवर देवजी देवाधिदेव वीतराग, तज मिथ्यात भरम नाहो

जिनमंदिर बनवाइये ए सुधो शिवपुर माग वा॰ इण अधिकारें भाषी हो ए दूजी पांचमां खंडनी इंद्रचंद ए ढाल, आगे छै ॥ ५५ ॥
अति मीठीहो ए धरम कथा मन भावनी सुणज्यो बाल गोपाल ॥ ९ ॥

दूहा

रावं राणा आगे हुवा केइ महाजन लोग । जिन मंदर बनवाईया थिर थार त्रिकरण जोग ॥ केइ बनवाया कोडूंवने केई बनसी फेर । तीरथ देश प्रदेशमें जिन मंदिरहै ढेर ॥ अगे॰ मंदिर घणा जिनवरका दीपंत । दरसनसें पातिक भडे होवे पुण्य महंत ॥ तिण कारण हूं पिण सही जिनमंदिर बनवाय । सफल मनोरथ आपणा करूं धन खुब लगाय ॥ धर-

में धर्मके काममें ढील न करीये कोय। शुभ कारज जलदी कीया मन बञ्छित फल होय ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ३ ॥ वीर जिनेश्वर सांभल बीनती परदेशी ॥

मंदिर एक बनायोरू बडेर दूगड़ सिंह प्रताप, राजगृही नारि पांचे पहाड़में वैभार गिर गत पाप मं० धम्माशाल भद्र जेह- नें ऊपरै सदगति पाम्यासार, गणधर एकादस प्रभू वीरना पाया पद श्रीकार मं० अवर घणावली केई मुनि राजजी तेहनें ऊपर जाय, आतमा निरमल कीया आपणा ततखण कर्म खपाय मं० तेहनें ऊपर सेठ सुजांणजी मंदिर बनायो एक, उंचा सिखर बहुतर लिया मणो निरख्यां उपजै विवेक मं० अच्छे महूरत प्रभू पधरावीया उच्छव कर बहुभात, रूपीया दश हज्जार लगावीया गुण गावै दिन रात मं० सिखर गिरिनी जात्रा जायवा मनमें कीयो विचार, आछो महूरत देख्यो सेठजी शुभदिन शुभ घड़ी वार मं० तंबू डेरा पाखसि रायचा समीयाणानें कनात, गाड़ो रहलु सुखासन पालखी रूण झूण करे रथ जात मं० जात्रा करवारे जी कोई प्राणिया सिखर गिरीकुं जाय, सोसब चालोरे मेरे साथमें इसें सहुनें कहाय मं० पांचमे खंडें ढाल ए तीसरी कही इन्द्र बनाय, आगे अधिकार बहुत चोखो अछै सुणो श्रोता समुदाय मं० ॥ ६ ॥

॥ ५६ ॥

दूहा

सिखर समेतनी जात्रा चाल्या दूगड़ सिंह प्रताप । संघ बनाया सामठी सहु तिलक लीयो आप ॥ साधु अने वलो साधवी
श्रावक श्राविका जांगा । जय जय शब्द उचारती चउविह संघ वधांगा ॥ चउदेह पुठिया संघमें सबकुं लारें लेय । सबकुं
हींनो पालखी गाड़ी सगाड़ दय ॥ जिसकुं जो कुछ चाहिये सोही सेठजी दीन । कमी नहीं कोई बातरी इच्छा पुरण कीन ॥
॥ ५७ ॥ जिनमंदिर लेई संगमै तीरथ भेटण काज । भाव धरी संगमै घणा सब मिल चले समाज ॥ ॥ ५७ ॥

ढाल ॥ ४ ॥ बींकीडीया घणा मंभरे एदेशी ॥

गिरवर सिखर समेतनी जात्रा करवा काज, श्रावक सेठ वाही चाल्या संघ उमंगमें जय जय करत आवाज श्रा० तीरथ जात्रा
कीजीयें लीजीयें नर भव लाह, भव भव पाप गमाइयै निज नित कर चितचाह श्रा० पडिकमणा दानु तकमें करता साच
सत्य, त्याग, ब्रह्मचारी धरती सूवे एकाहारी हरिभंग श्रा० ईम अनुक्रमसें चलिता पहुंचें सिखर नजीक, गांधिकपुरके
जायके डेरा दीना ठीक श्रा० उहांपर सब श्रीसंघ मिली मुगता फलमें वधाय, धीमी पल्हइनी आरती बरनारी गुण गाय श्रा०

फर श्रीसंघ तिहांसे चल्या पहुंचा मधुबन आय, तलहटी मंदिर भेटीया श्रीसंघ राजी थाय था॰ दूजे दिन गिरपर चढ्यां वीसे टूंक जुहार, भाव भगति बहु विध करी घंस केसर घन सार था॰ पास जिणंदनी पादुका बहुविध पूजा कराय, धुर मठ मंदिर आसके दीनां पाप गमाय था॰ चौथा पांचमा खहमो ठाल हुवे अधिकार, कही इंद्रचंद्र श्रोता भवी मनमें हरष अपार था॰ ॥ ६ ॥

दूहा ·

करी पहाड़नी जातरा श्रीसंघ सब परिवार। कनक रजत कुसुमें करी शिखर वधायो जुहार॥ आया सब मिल तल करी पूजा सतर प्रकार। करी भगति जिनराजकी श्राप मध ... मार॥ साधर्मी जिमावीया बिविध करी पकवान। रूपीया २ तिनक कर दीया सेठ सुजांण मदगुरुकी ... मीका धन धन देय ... । पहिराया भावे चढी करआड़ी बहुमूल॥ भाजक भाटोंने दीया दांन बमरांन हुय। ... लाहा लीया राखी मनकी भूख॥ ५॥

—❊—

ढाल ॥ ५ ॥ शिखरजीरी पदमावती ठणी ॥

गिरवरनी जात्रा करी श्रीसंघ सकल सुजांण, आचारिज पगनी पूजा करी सुप्रमांण गि० देव देवी सब मांनीयां भोमी
याने क्षेत्रपाल, यथ याग भगति करी तेल सिंदुरनी लाल गि० फरमी वास चिचंदन मनधर भाव प्रधान, मंदिर एक बना-
॥ ५९ ॥ वियो ऊंचा अति आसमांन गि० मकसूदाबादसें आवीया ओमहुं सब न्यात, श्रीफल पांच दई करा मनमें अति हरखात
गि० इण रीते ते सेठजी तीन बरसके बाद, संघ निकाले शिखरजी किन गुण गाय वरवाद गि० इस तरे परताप सिंहजी ॥ ५९
शिखरजी संघ निकाल, गया इग्यार टर्फे पहेरी संघ नी माल गि० इक दिन सेठ प्रतापजी सुणी सदगुरु वाण, सिद्धाचलनी
जातरा जो करे भवि गुणखाण गि० नरक तिर्यंच गति तेहने भवि होवै कभी नांण, उत्तम गति निश्चय लहै गणधर वचन
प्रमांण गि० पांचमा खंडे पांचमी कही उदयचंद ए ढाल, आगल अति मीठी कथा सुणज्यो बाल गोपाल गि० ॥ ९ ॥

दूहा

सिद्धाचल तीरथ बिषै सीधा साधु अनंत । पविनव पटमी पाईया तेरा करम दवंत ॥ एहवे तीरथ मामती भाख्यो

वीर जिणंद । पूर्व निवाणुं आवीया स्वामी ऋषभ जिणंद । सुख वचनसि भाषीयै अंगुल २ सिद्ध । उत्तम तीरथ एहके नाम मोया नवनिद्ध ॥ सरधा सहुं भावसें मुण गिर सनमुख जाय । भव अनेक पातिक सहजै दूर पलाय । एहवो गुरु मुख सांभला सिद्ध गिरी अधिकार । दूगड़ सिंह प्रताप ते मुण पर करे विचार ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ६ ॥ वेवे मुनिवर वहरण पांगुरयारे एदेशी ॥

सिद्ध गरीनी महिमा सांभलीरे गुरु मुखथी तिणवाररे, सेठजी कीधी धारणारे जाय वांदकुं जै तीरथ साररे सि० जीवू माहुरु चमू लीधा खरारे मन दृढ़ भावाना निरधाररे, जिण दिन विमला चलनें फरसहुंरे तिण दिन बाद्ररसु एकाररे सि० करी तयारी घरनी सेठजीरे महुरत लीधो पाको जाचरे, खबर करादी देश विदेशमेंरे आवो जिसकुं आणा लोयरे सि० खबर करत सब देश लोकनें साथे लीधा सेठजी आपरे, साध साधवी संघमें सोभतारे श्रावक श्राविका करता जापरे सि० दम अनुक्रम सुख ते चालतारे पहुंचा बखाला गामनें मांहिरे, तिहांथी चौबीस गाउ सिध गिरीरे छांनि डींगा और वधांई हुवी सि० तिहांसि पश्चाद्दीठा नैणथीरे हुवो आणंद हरष अपाररे, श्रीसंघ मिलनें कीधी आरतीरे वधाया मोतीयनमें भावसुरे सि०

पालीतावें आय डेरा दीयारे लखित सरोवर निरख्यो जायरे, श्रीसंघ सब मिल भेला सामठारे तलहटी मंदिर वंद्या सीसनमायरे सि॰ संवत् अठारै तियासी सालमेंरे उत्तम जांणो मास असाढ़रे, आठम दिन गिरवर भेट्यो जावनेंरे मङ्गल वारनें मन धर भावती गाढ़रे सि॰ ढाल छट्ठी कही पांचमा खंडनीरे वाचक इंद्रचंद चितलायरे, आगे अतिमीठो अधिकारछे श्रोता सुनज्यो दिल हरषायरे सि॰ ॥ ६ ॥

—※—

दूहा

जल चंदन काश्मीरजा कुसुम धूप वरदीप। अक्षत चाव फल प्रमुखले वहुबिध द्रव्य समीप॥ जयर शब्द उचार ते सब कोई चढे पहाड़। नेमनाथनी पादुका पहलो जाय जुहार॥ हिंगुलाज नेहडे चढ्या कलिकुंड नमिया पास। मांन मोडी ऊपर चढ्या तोड़ी करमकी फांस॥ ऋषभानन चन्द्रानन वारिषेण वर्द्धमांन। इण चारू पादुका पूज्या सखुता जांण॥ इम अनुक्रम चढ़तां थकां विमलवसीमें जाय। पहुंच्यो श्रीसंघ सब तिहां सेठजी मन हरखाय ॥ ५ ॥

॥ ६१ ॥

ढाल ॥ ७ ॥ नींदड़ी माह निवारीयै एदेशी ॥

चैत्य वंदण युगते करी सेठें कीधीहो स्तवना मनलाय, कियो दरशन शुभ भावसें भले पूज्याहो स्वामी ऋषभना पाय ध० धन धन सेठ प्रतापजी रायखतल होगया चढते भाव, प्रथम जिणंदनी पादुकाभेव्या पूज्याहो चोषे चित चाव ध० आस पास ना देहरा जुहाख्याहो पांचूं अङ्ग नमाय, पुंडरीक गणधर प्रतें वलीवांद्याहो मनमें हरषाय ध० चवरी जुहारी नेमनी तिहां निरष्योहो सेठ धर्मनो द्वार, माता देवी चक्कसरी तेहनी पूजाहो अतिकीनी सार ध० उहांसें आया मोतीवसी बालावसी हो कीयो दरस सलूक, अद्भूत बाबा भेटीया वली फरसीहो पेमचंद मोदीनोटुंक ध० हेमावसो भेठी तिहां उजमवसीहो भेढी हरष नमाय, साकरवसी छीपावसी खरतरवसीहो भेव्या चौमुख जाय ध० मरुदेवीटुंक जुहारके वलीपूज्याहो शांतिनाथना पाय, सम्प्रति राजानो कीयो देषी मंदिरहो सब पाप गमाय ध० सब श्रीसंघ इम अनुक्रमें कीयो दरशनहो जाय घेठीनो पाज, चेलणा तलाई सिद्धसिला सेठ फरसीहो उलषाभोल समाज ध० ढाल कही ए सातमी खंड पांचमेंहो इंद्रचंद सुजांण, श्रोताजन तुम सांभलो आगे आछीहो अति चोषो वषांण ॥ ८ ॥

॥ ६२ ॥

दूहा

ऊपरथी जात्रा करी नीचै उतरया सेठ। तलहटीनी विध साचवी थाए उतारे ठेठ ॥ वारे गांउकी सही सेल प्रदच्चणा दीध। गिर कदंवनें हस्तगिर दूणका दरशण कीध ॥ नदीस कुञ्जे माहनें सेठजी मज्जन कीन। चरण युगादि जिणंदना भेटे परम प्रवीण ॥ सिद्धवड़नो दरशण करी पालितांणे आय। पूजा निन्नाणड प्रकारकी करी प्रभूनी चितलाय ॥ साधर्मी भगति करी सद्गुरु पूज्या पाय। रुचीयोग तिलक दे श्रीसंघ सकल जीमाय ॥ दांन दीया जाचक प्रतें माल दुशाला दर्व। जो मांग्या सोही दीया इच्छा पूरी सर्व ॥ मंदिर सेठ वनावियो गिरपर मोटो एक ॥ धन खरच्यो बहु मोकलो जगमें राषी टेक ॥ ७ ॥

—※—

ढाल ॥ ८ ॥ कृपानाथ मुझ विनती अवधार एदेशी ॥

जात्रा करकी सेठजीरे विदा उहांसे होय, गिरनारे चल्यासहुरे आछो महुरतजोय (भविकनर) १ सुणज्यो एअधिकार मनमें राषी प्यार भ० सु० एटेर० जुनागढ़में जायनेरे डेरा दीना ठेट, चढी पहाड़ने ऊपरेंरे राजुलकन्तनें भेट भ० सु० सहस वन प्रभु

॥ ६३ ॥

चरणनेरे वांद्या पूज्या सर्व, दत्ताचयी टुक पांचमीरे पूज्या सेठ निगर्व भ० सु० तिहांसे श्रीसंघ सब चल्यारे पहुंचो धूलेवे जाय, भेट्या केशरीया नाथनेरे सेठ खुसी मन थाय भ० सु० तारंगा संखेसरारे आबू आदे तीर्थ, श्रीसंघ सब मिल भेटीयारे संघ प्रताप समर्थ भ० सु० कुशल खेमसे आवीयारे अपणे घर सबलोग, सेठ जीमाई न्यातनेरे करी पकवान्नो जोग भ० सु० दुगड़ सिंह प्रतापजीरे दोयबार संघ लेय, सिद्दाचल जात्रा करीरे सब दुख दूर करेय भ० सु० मन प्रसंन धन खरचियोरे रुपीया तीन तीन लाष, बाकी कुछ राषी नहीरे पूरी सब अभिलाष भ० सु० खंड पांचमो ए हुवो पूरा हुआ अधिकार, ढाल आठमी तेहनीरे कही इन्द्रचंद विचार भ० सु० ॥ ८ ॥ (चौपाई) खंड२ मीठो अधिकार। सुणतां होवे सुख श्रीकार ॥ पांचमो खंड भयो सम्पूर्ण। बक्ता श्रोता सुख लहै तूर्ण ॥ १ ॥

॥ इति श्रीपुण्य पवित्र प्रताप चरित्र पञ्चम खंडः सम्पूर्णम् ॥

॥ ६४ ॥

॥ श्रीमद्भगवते चिचद्रकाय नमः ॥

बावू साहेब

॥ श्रीमत् प्रताप सिंह चरित्रम् ॥

षष्ठ खंडः

दूहा

अगम अगोचर अलख अज अकलङ्की अविनाश । अद्वय अव्यय फुनि अरुज अविचल लीला विलास ॥ मंत्रादिकको मूल है योगीश्वरको ध्यांन । सकल धरमको सारहै ज्ञानवन्तको ज्ञान ॥ परमतत्व जिणवर कह्यो अक्षय अक्षर सार । श्रीश्रीश्री ॐकारने प्रणमूं बारहजार ॥ माता मेरी सारदा दायक ज्ञान प्रकास । प्रणमु सदगुरु भावसें दीजे वचन विलास ॥ दूगड़ सिंह प्रतापनो रास मह्यसुखकार । तेहनो छट्ठो खंड ए कहस्यूं मनधर प्यार ॥ ५ ॥

—*—

ढाल ॥ १ ॥ किसकी चेली किसके पूत एदेशी ॥

दूगड़ प्रतापसिंह उदार, धरम करणने अति हुसियार ।—भाईसांभलो ! महीने २ करता सैल, जीमें बिरादरी मनने मेल भा० एक बनायो अलग मकांन, आया गया भोजन करे पुमांन भा० जो आवे इहां श्रीपूज कोय, तिणकी खमासण सेठके होय भा० शाल दुशाला मोहर थांन, देईने करता बहुमांन भा० पोषहशालाने धर्मशाल, मंदिर काज जो सवाल भा० तेहनी पूरे सेठजी आस, देवे रुपीया धननी रास भा० अरज करे जो सेठने पास, सो नहीं जावे निरास भा० तीरथ जात्रा जावे जेह, खरचा देवे तिसकुं तेह भा० आवे बिरादरी देशका कोय, खबर लेवें बाबूसा जोय भा० करें महोच्छव बरषमें एक, फागुणमासमें राखें टेक भा० पूजा प्रभावनाको नही पार, जब मन आवें तब करे बिचार भा० भादोमें सेठ दरस कराय, कासमबजारमें सबने जीमाय भा० बरस मांहे इमकरें इकवार, भाडोदेजश लेवेसार भा० एकेक लोई देवे वनात, शीतकाले गुरुने विख्यात भा० दीन दुखीकुं कपड़ा देय लषमीनो इम लाहो लेय भा० छट्ठे खंडे पहली ढाल इन्द्रचंद कहे वचन रसाल, आगे प्रबंध बहुत सुखकार सुणज्यो श्रोता भवि नर नार भा० ॥ ८ ॥

॥ ६६ ॥

दूहा

दूगड़ प्रताप सिंहजी च्यारे बुद्धि निधांन। राज काज दुनियाविषे माने सब कोई आंण ॥ बिरादरी सब मानती कोई न लोपैं कार। जोइ कहे सोई करै वचन न चूके लिगार ॥ निंदा विकथा नही करै रती न बोले झूट। जीव दया मनमें बसी न कहे कोई दुठ ॥ विसन सात दूरे कीया मारग चाले न्याय। दांन शील तप भावसे जैन धर्म दीपाय ॥ चौविहार करै सदा पाले जिणवर आंण। नर नारी सवयूं कहे धन धन सेठ सुजांण ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ७ ॥ बे करजोड़ी विन वूं एदेशी ॥

इम अवसर तिहां सेठजीरे मनमें करें विचाररे, (भविकनर) नवपदनी ओली करूं रे जिम हुवे सुख श्रीकाररे भ० श्रीसिद्ध चक्र आराधस्युंरे लाल जिम कटे कर्म जंजालरे, आतम गुणनी संपदारे आय मिले सुविशालरे भ० श्री० गुरु पाशे जाय भाषीयोरे अपणा मन परिणामरे, गुरु कहे देवाणुप्पियेरे विलंब तणो नही कांमरे भ० श्री० एह तणी विधी जो अछेरे शास्त्र मांहे शुभ रीतरे, ते बतावो अम्ह प्रतेरे सदगुरु तुम सुविनीतरे भ० श्री० आशु सुदि सातम थकीरे लेइ महुरत साररे, त्रि-

करणा पालन कीजीयैरे तजि सब गृह व्यापाररे भ० श्री० थानक निरवद्य जोयनेंरे रहियें जाय एकांतरे, तज सटपट संसारनी रे भजीवें श्री भगवन्तरे भ० श्री० क्रोध मांन माया तजीरे लोभ लहर कर दूररे, नारी तणो संग नहो करोरे धरती सूवो जरूररे भ० श्री० नव आंबिल नव दिन करोरे जुदार रंग जांणरे, किरिया विधिसें तुम करोरे सुणो वली चरित्र वखांणरे भ० श्री० छट्टा खंडनी ए कहीरे दूजी ढाल रसाल, कहै इंद्रचंद श्रोता तुमेरे सुणज्यो वाल गोपालरे भ० श्री० ॥ ६ ॥

दूहां

इम करते दिन बिततां आयो आशु मास। दूगड़ सिंह प्रतापके मनमें भयो उल्लास ॥ ओली करवा सेठजी तुरंत भये तैयार। घर भोला वस्त्र देदीवो बाजोत्तरने सार ॥ बिरादरीका आदमी साथे दस अरु पांच। सद्गुरु पासे आवीया किरीया करवा सांच ॥ पहलो पड़िकमणो कीयो पीछे वांद्या देव। आंबिलनो पचखांण कर चरित्र वखांण सुणेव ॥ पूजा अष्टप्रकारनी काउसग्ग पामणा जोय। वासक्षेप पूजा करी देव वंदन वली होय ॥ ५ ॥

—*—

॥ ६८ ॥

॥ ६९ ॥

ढाल ॥ ३ ॥ बैरागी थयो एदेशो ॥

आशु सातम चांदणीरे पहिले पद अरिहन्त, विधि पूर्वक किरीया करीरे आराधें गुणवन्तरे १ (भवियण) सांभलो सुंदर ए अधिकाररे, धर्मनो मांमलो आपै शिवसुख साररे भ० बारस गुण अरिहंतनारे मनमे कर२ याद, लोगस्स काउसग्ग पासणारे देव वंदन सुप्रसादरे भ० बहुविध प्रभु पूजा करीरे आंमल धवल करेय, पहलो पद इम सेठजीरे आराधें मन देयरे भ० आठ गुण करी सिद्धकुंरे आठमके दिन जांण, पूजी सब किरिया करीरे लाल आंमल सुप्रधानरे भ० तीजो पद नवमी दिनेंरे गुण छत्तीसें सूरीश, किरीया करने सेवतारे आंमल पीत करीसरे भ० पाठक पद दशमी दिनेरे एकादशी दिन साध, पण बीस सगवीस गुणें करीरे आंमल करी आराधरे भ० दरशण ज्ञान आराधतांरे बारस तेरस जांण, चौदश पूनिम दिन सहीरे चारित तप गुणखांणरे भ० तीजी छट्ठा खंडनीरे ढाल कही इन्द्रचंद श्रोता सांभल जोतुमेरे दिन२ अधिक आणंदरे ॥ ९ ॥

॥ ६९

॥ ७० ॥

दूहा

विस्तीरण जिन मंदिरें सुंदर पीठ रचाय। सिद्धचक्रको मांडलो ऊपर लिखै बनाय॥ शालि प्रमुख पञ्च रङ्गका मंचसें पावन धांन। अचरिजकारी चित्रयुत रचना रचै सुजांण॥ शास्त्र थकी बिधि जांणज्यो दूहां लिखतें इम नांहि। बिस्तरण अब करीजतां ग्रंथ बहुल होजाहि॥ अरिहंतादिक पदतणी थापन करो दिल आंण। देवी देवता थापीया अपणें अपणें थांन॥ सामग्री पूजा तणी यथा या सब कीध। जो जो चहियें चीज सब भेली करीने लीध॥ ५॥

॥ ७० ॥

ढाल॥ ४॥ ए व्रत जगमें दीवो॥ आय रहो दिलबागमें, एदेशी ॥

सेठजी किरीया आंमल करीनें नवें दिन कीधी ओली, दशमें दिन उपवास करीने मंडल पूजा बोली [मेरेभाई] इण विध कीजे ओली कूड़कपट सब छोड़ी मे० इ० नवर रूपीया नवपद ऊपर हीरा माणक सब चढ़ाया, मिसरी वीरत भरीनें गोला वस्त्र सहि चढवाया मे० इ० नव निधान एकैक रूपीया सेठ चढाया भावे, अवर जहां जो चहीये पूजा सदगुरु जेम बतावे मे० इ० मंडलका उद्देश करीने शासन देवी देवा, नवगृह दश दिगपालनो पूजा करी सुख सम्पति लेवा मे० इ०

अष्ट द्रव्यसे पूजा कीनो मङ्गल कलश चढ़ाया, जय जय शब्द उच्चारण करके ढाकि फतेकी बजाया मे० ड्र० तिलक मङ्गल कीयो श्रीसंघ मिलके सेठजी आरती कीया, ज्ञान पूजा कर सदगुरु सेवा दांन जाचकने दीया मे० ड्र० पञ्च शबद बाजिन्त्र वाजते निज घर सेठजी आया, बाबू साहब पारणो कीना अवरने पारणा कराया मे० ड्र० ऊजमणाकी करी तयारी जिम सद्‌गुरुजी बताया, शगति सारु भगति करीये वीर जिणंद फुर माया मे० ड्र० छट्टे खंडे ढाल ए चोथो इन्द्रचंद मुनि भाषी, श्रोता जनने सुणवा सारु जिन आगमकी साषी मे० ड्र० ॥ ८ ॥

दूहा

तप उद्यापन विन कीया फल दाता नही होय। तिण कारणते कीजीयें उजमणो गुण जोय॥ नवपदनी ओली करी सब जिन मंदिर जाय। धोतो दुपट्टा रेयने नव साथीया बनाय॥ चंदर बाने पूठीया नवर सवे घर ध्यांन। नव पूठा नव पट्टिया परमुख नंद वषांण॥ जिन पूजाका उपगरण नव नव सवही जांण। जीमाया साहमी प्रतें करर नव पकवांण॥ तिलक करी सेठजी रुपीयोर दीध। पांन प्रमुख श्रीफल दीया इण परलाहो लीध॥ ५॥

॥ ७१

ढाल ॥ ५ ॥ सुण चंदाजी श्रीमंधर परमातम पासे जावजो एदेशी ॥

मन हरष धरी दूगड़सिंहप्रताप इसी ओली करी होये हरष कर स्वारथ साधनकाज मिथ्यामति परहरि । टेर । इम सातवी स करी ओली, दस पांच विरादर मिल टोली, प्रभुपद पूज्या केशर घोली म० इम वरस२ ओली करता, उपर उजमणो अनुसरता, वलि भाव भगति मन धरता म० सब दुनियां कहे धन धन करणी, अनुमोदन केइकरता वरनी, भवसारसे तारण तरणी म० इम करता सेठके पुत्र भया, रूपबंत जिस्या कामदेवनया, लच्छीपत उसका नाम दिया म० भया दूजा पुत्र वहुतनीका, धनपत सिंह नाम दीया तिनका, रूपबंत महागुणहै जीका म० इक पुत्र हुवा लच्छमी पतके, गुणवंत वड़ाहै सुधमतिके, नाम दीया छत्र सिंह तिनके म० धनपत सिंहके सुत तीन भये, गणपत नरपत सिंह नाम कीये, महाराज वाहादुर सिंह नये म० हुवा लच्छमीपतके इक पोता, सब दूनियां उसका मुख जोता, श्रीपत सिंह नाम उसका होता म० ढाल पांचमी छट्टे खंड कहो, इन्द्रचंद वाचय मगह गही, श्रोतासंब सुणके हरष लही म० ॥ ६ ॥

—*—

दूहा

दूगड़ सिंह प्रतापजी मनमें हरष धरेय। जितना मंदिर बनाविया साखी विगत कहेय ॥ सिद्धाचल और शिखरजी दुकर मंदिर बनाय। राजगृहीमें एकहै एक बनारस थाय ॥ बालूचरमें एकहै आठ मन्दिर एक। एक प्रतापगञ्ज मांहिने भरथपुरमें एक ॥ रंगपुर मांहि एक वली इह नवे मंदिर जांण ; जीरणका उद्धार कर धन खरच्या परमाण ॥ पोषधकी शाला प्रमुख अवर धरमकी शाल। सबमें द्रव्य लगावीया चितमें थइ उजमाल ॥ सदा वसत बालूचरे करीयो सेठ सुजांण। जगत जस कीरत घणी पुन्यवंत गुणखांण ॥ ५ ॥

७२ ॥ ॥ ७२ ॥

ढाल ॥ ६ ॥ कड़खानी एदेशी ॥

देश परदेशका आवता आदमी तेहने एक दिन देवे सीधो, जात परजात कोई कारण नही कांम परताप सिंह एह किधो दे० एक दिन सेठने जाय कोई इमकह्या आज गंगाकि दरियाव मांहि, आदमी कोई मच्छादिका आदमी मछलीयां मारता मांने नांहि दे० आ एही बात करता थका तुरकवड़ा काजुको सह्या नथारी, करत [illegible] बहु जलचरां जीवरो रात दिन

पापीयां जंतु मारे दे० हुक्म हुवा बा.तरो आप जोई करो सोह ततवीर या शीघ्र करमी, काम एह कीजीयें तुरंत उ.श लीजीयें दीजीयें अभय दांन धरणी दे० सेठ या बात सांभली रीस कर तुरंत ललकारीया सुभट ताता, जाय सिपाइयां फोजदारी करी युद्ध भयो जंग उहां ऽति विख्याता दे० क्रोध करी तुरकपति भेजीया गंगाके तीर नोभाग रोपी, जीव मारण तणी दुष्टता पुष्टता धूम करवा लगा जोर कोपी दे० हुकमदे सेठ नीशाणकुं फाड़ कर जाल महाजालकुं तोड़नांषी, देनी दरखास बिलातमें सेठजी करीय बहु आदमी तत्र साषी दे० खरचा रुपीया घणा सेठ उहां आपणां प्रगट तब बाजीया जित डंका, हारी यो तुरकपति लाजीयो बापड़ो धरमका सिंह प्रतावंका दे० ढाल छट्टी भई खण्ड छट्ठे भली शुद्ध वउ.ातणी एह देशी, कहत इन्द्रचंद श्रोता भणी एकथा जे शुणे तेसहो सुख वेशी ॥ ६ ॥

—※—

दूहा

सेठ मुकद्दमा जीतीया हरषित भये अपार। सफल भई मन कामनां जगमे यश बिसतार॥ तीर गंगाके सेठजी फते

॥ ७५ ॥

नौगांणा गढ़ाय । खबर करी सब लोकनें नरसे ढाल पिठाय ॥ चावे मच्छी जो मारसा जीव नदीरे मांह । उसकुं फाटक होयगी ध्यामे शंसय नांह ॥ सब काहु शुथायाँ इम कहे अभी पुण्य प्रताप । जबर मुकद्दमा जीतीया धम्म इन कामा थाप ॥ रहता सुषें समाधिसें कितने दिनके बाद । वीसनथांनक ओली करुं सेठ करे गुण याद ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ७ ॥ सिणजा राणी देशो ॥

भवि प्यारारे दूगड़ सिंह प्रताप बीस थांनक ओली करे, काटे करम सन्ताप हुवा व्रतके ओ आदरे भ० भ० धरि पद पद भगति आराधे मन शुद्दसें, आपणि आतम शक्ति करे क्रिया गुण वृद्दसें भ० भ० दूर करी परमाद सह व्यापार अलग करे, सद्गुरुनें परसाद चोथो व्रत पिण अनुशरे भ० भ० भाव धरीने अपार बीस थांनक आराधिया, आगमके अनुसार विधि माफक सब साधिया भ० भ० जब तप पूरण थाय बीस थांनक मंडल करी, पूजा करी मनलाय बहुविधसेती हरषधरी भ०भ० लें मोहर प्राचीन इकार पदमे चढायने, अत्र पूजासव कीन गुरु कहा तिम मनलायने भ० भ० ऐसमे कलश ठराया अति उच्छव चित चंगसे, संघ मिल तीलक कराय करी आरती मन रंगसे भ० भ० इम सेव्या वीसथांन जावक हांन दीयो घणो,

पापीयां जंतु मारे दे० हुकम हुआ बातरो आप जोई करो सोइ ततखीर या शीघ्र करणी, काम एह कीजीयें तुरंत जश लीजीयें दीजीयें अभय दांन धरणी दे० सेठ या बात सांभली रीस कर तुरंत ललकारीया सुभट नाता, जाय सिपाइयां फोजदारी करी युद्ध भयो जंग उहांऽति विख्याता दे० क्रोध करी तुरकपति भेजीया गंगाके तीर नोशाण रोपी, जीव मारण तणी दुष्टता पुष्टता धूम करवा लगा जोर कोपी दे० हुकमदे सेठ नीशाणकुं फाड़ कर जाल महाजालकुं तोड़नांषी, देनी दरखास बिलातमें सेठजी करीय बहु आदमी तत्र साषी दे० खरचा रुपीया घणा सेठ उहां आपणां प्रगट तब वाजीया जित डंका, हारी यो तुरकपति लाजीया बापड़ो धरमका सिंह प्रतापवंका दे० ढाल छट्ठी भई खण्ड छट्टे भली शुद्ध वख्याणणी एह देशी, कहत इन्द्रचंद श्रोता भणी एकथा जो शुणे तेसही सुख वेशी ॥ ६ ॥

—*—

दूहा

सेठ मुकद्दमा जीतीया हरषित भये अपार । सफल भई मन कामनां जगमें यश बिसतार ॥ तीर गंगाके सेठजी फते

पूजा प्रभावना जिनजीका वारता हुक मनाहो० क० सहरम पदरहे मंदर भाटा जांणियेंहो० मं० मूलनायकना भक्ति करा
ते बषाणियेंहा क० पहला पूजा कराय सतर भेदी तणीहा स० दोवी कड़ा जोड़ी एकेक सुंदर कनकना हो० सु० पीछे
प्रभुजीके काठम ताड़ा गढ़ायकेहो० तो० पहराया भले भाव तें पूजा करायकेहो० पू० बाजुवंध पहराया प्रभुजीके बांहमें
॥ ७७॥ हो० प्र० सेठजी पूजा कराय अधिक उच्छाहमें हो० अ० प्रभूजीके मस्तक मुकट कुण्डल पहरावीया हो० कु० पूजा करायके ॥ ७७
भावना अधिके भावीया हो० अ० सिंहासन सोनेका दीया वनायके हो० दी० राजी भया मन सेठ प्रभुकुं बेठायके हो० प्र०
तीन छत्र भामंडल पुठे चमकता हो० पु० पूजा कराय चढाया सोनेका दमकता हो० सो० इन विध कोधी भगति प्रभुको
भावसें हो० प्र० सफल कीयो अवतार अधिक उच्छाहसें हो० अ० रुपिया लगाया हजार पचासकें आसरे हो० ए० सुण्या
दिन रात गुरुके उपासरे हो० गु० जे कोई लगा पाप तिके तें षमावता हो० ति० मिच्छा मिदुक्कड़ देय हरष उपजावता
हो० ह० रा चोरासी यूनो जीवांका जा कता हो० जी० सबसें मैत्री भाव करी मन गह गही हो० क० रात्रि भोजन
व्रत पाला चित्तसें हो० ... क्रिया करी चोविहार जलमयि चित्तसें हो० ज० थोडो जांण्यो सेठ आउखो आपणो हो० आ०

जीव लगायो धर्ममें सेठजी बात घणा हो० से० कहा खंडनी ढाल इन अधिकारमें हो० इ० ढाल कही चुन्नीलाल अधिक मन प्यारमें हो० अ० श्रोता बाल गोपाल सुणी सुख पावसी हो० सु० दूख संकट सब तेहना दूर जावसी हो० दू० ॥ ६ ॥

दूहा

दूगड़ सिंह एताप जी आयू बाकी रहा एक । बाकी रहा तब सेठजी मनमें करीय विवेक ॥ समेत शिखर सिद्धाचलें सहस्रमर तारंग । राजगृही पावापुरी चम्पापुर चितचंग ॥ आबूजी गिरनारजी ए सब तीरथ ठांम । रूपिया दीया भंडारमें शरधा साख्तांम ॥ सहर मकसूदाबादके सब मंदिरके मांह । सौ सौ रूपीया सेठजी दीदा मनमें उच्छांह ॥ साधारण पोशाकमें रुपैया पचास पचास । बाबू साहब जोसमें दिया मन धर उल्लास ॥ ५ ॥

ढाल ॥ ६ ॥ उरोरने गिरधारी उरो एदेशो ॥

दूगड़ सिंह एताप तणो, उम एकजा मतितम मांह घणो, सेठ आपणो आउषो अलपलखा, करे दान पुन्य ते सेठ सणो १ सब धन खण्डा मिठाई, सब गांव गरवामें दिलवाई, सागारो अणशण उल्लासें, लिवे सेठजी सदगुरुने पासें २ सब पाठ

सो वछर पच्यासी, सेठजोवा कांषा मुजिवासी, इम धरम तणो भावना भावे, निज मुखसे जिनवर गुण गाते ३ भाग्यामन
कुटंब तणी लेई, लछमीपत धनपतने दई, हय वसुधा निधी मेदिनो माले, १८१७ वामान महिने गुणमाले ४ वडा दयमो
दिन वधते दावे, बाबु साहब परमान पावे, एहवो धरमी इ जग मांहा, कोई न हुवो न हुवेहै मांहि ५ मन हरष धरीने हम
। ७९ ।। भाई, [illegible] तणा ए रास गाई, [illegible] इसमे जोई, पंडित तम सुध कोजो सोई ६ जाड कनामें नहो कांग्यु, ए बाल ।। ७८ ।।
ख्याल करके मानं, खट खंड [illegible] चोपी, पुन्यवंत प्रतापना गुण गायो ७ नर नेत्र वेद निधी वसुधा, १८४७ संवच्छर
माधव मास मुदा, दिन [illegible] तील तणा वार, ए रास कीयोमें भवि सार ८ ढाल ए नौमो खंड छट्टे, याद आनो चित
चति उतकटे, भया पुरण छट्टा खंड भलो, श्रोता जन सब तुम सांभलो ६ श्रीपद्मचंद गछ अवतारो, श्रीलक्षीचंद सूरी गण
धारी, ताम सीस वाचक [illegible] गुण परधान १० तिहनो बालक सब जांणो, मुनि खबीरचंद वखांणे, देश
बंगालो गुण पुंज, मकसुदाबाद [illegible] माजे ११ गुण पचास ढाल करी, ए चौपही कीधो हरष धरी, भणज्या गुणज्या नर
नारी, सुख संपति लहस्यो [illegible]कारी १२ चौपही खंड खंडमें अधिक मीठास, भणतां गुणतां गुण प्रकाश, गुण गायक जा

हवि प्रोंगो, ले सुगाक्या पाहि तको वांगो १३ इति श्रीपुन्य पबित्रे प्रताप चरित्रे षष्ठमः खंडः संपूर्णम् ॥ इति श्रीप्रताप सिंवजीको दउपही संपूर्णम् ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ ‡ ॥

श्रीश्रीबाबू साहेब राय धनपति सिंह बाहादुरस्यानुज्ञयात्तेनैव बालुचरस्थ धनसिन्धु यन्त्रालये सम्वत् १९५१ स्थिताब्दे सौर वैशाखीय शुक्ल तृतीया चन्द्रवासरे श्रीरसिकदास महान्तेन मुद्रितम्‌ । श्लोक संख्या १००१ एकोत्तरैक सहस्रम् ।

—*—